DISCUSSION ON THE WORKING OF THE MINISTRY OF TOURISM

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, let us take up the discussion on the working of the Ministry of Tourism. Shri K. R. Suresh Reddy.

SHRI K. R. SURESH REDDY (Telangana): Sir, first of all, I thank you for giving me the opportunity to initiate the discussion on the Ministry of Tourism. Well, I can start with sympathies to the hon. Minister because the Ministry worst affected due to Covid seems to be the Ministry of Tourism. Unfortunately, the support which the Ministry was expecting did not reflect in the Budget. The boldness which was exhibited in the main Budget presentation, unfortunately, did not percolate down to the Tourism Department. According to the NITI Aayog and the Standing Committee Reports, Tourism sector contributes five per cent to the GDP, accounts for 12.9 per cent of jobs leading to 8.8 crore direct and indirect jobs in our country. It is an eye-opener and it clearly indicates the potential of this Ministry and its contribution to the growth of the nation.

In this perspective, look at this year's Budget allocation to this Ministry, which is Rs. 2,027 crores and which roughly comes to 0.06 per cent of the Budget Expenditure. This, in my opinion, is a total mismatch. The main Budget emphasised heavily on disinvestment, monetisation, innovation, and, of course, we *See* new initiatives like bringing 'Drinking Water' into the Ministry of Health, and, renaming it as Ministry of Health and Well-being. Similarly, time has come for the Ministry of Tourism to take such initiatives because the coming years will definitely be a big boom and we have to be ready to face this.

On the lines of initiatives which the Ministry of Health took for taking in the 'Drinking Water', time has come for the Ministry of Tourism also to link up with other ministries, which benefit out of tourism, be it Railways, be it Jal Shakti, be it Medical and Health, and so many other departments. Now, my suggestion to the Ministry is to get integrated into such other ministries. For example, like the tribal sub-plan, the SC sub-plans in various ministries, if the Government can look at creating some kind of sub-plan like facility, then, this would enhance the tourism potential. It would also help the concerned ministry in generating revenue and also exploiting the full potential of tourism in our country. Of course, this cannot be achieved by the Minister alone. He needs the support of the Cabinet. The Prime Minister's intervention would be greatly helpful for him. If this is done, it would really be path-breaking. I would advise that instead of selling PSUs, instead of selling LICs, why don't you sell Indian tourism? That is where you will really get money. Convince the Prime Minister.

Make him the face of tourism so that the Ministry can benefit. If I may quote, as a kid I used to listen to a song, "जंगल में मोर नाचा, किसने देखा?" And, today, if you look at it, you will probably hear, "मैंने देखा, मैंने देखा।" मगर प्रधान मंत्री के बाग में मोर नाचा, किसने देखा? सब ने देखा, सब ने देखा, सब ने देखा। That is the advantage the Ministry, the Department of Tourism, will have by putting the Prime Minister's face. I just commented on a witty side with no disrespect to any office. But it is an opportunity for the Ministry to take advantage of the kind of potential which is available there.

I am sorry to say that the revival incentives which the Ministry had offered to the tourism industry, like a part of PF contribution would be made by the Government, collateral free loans, issuing Covid guidelines, certification of hotels, operational recommendations, are not enough. These are not adequate. In fact, this is like rubbing salt in the wound. Most of the tourism related people, be it small hotels, be it tourist guides, be it tour operators, most of them are washed off. They are not even existing to avail these facilities. The time has come when you have to provide liquidity, as the Standing Committee has recommended. Major countries which were affected worse than India, like France and UK, have done so. That would go a long way in supporting this.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude now. You had six minutes only, and you are finishing your time now.

SHRI K.R. SURESH REDDY: All right, Sir. Various tourism associations have also come forward and given some recommendations for economic support and for policy support. In the Minister's reply, I would like him to reflect on the initiatives they have taken on those recommendations, for example, creation of an empowered national tourism board with private sector involvement and professionals on board to run the various aspects of the Tourism Department. The NITI Aayog has suggested that foreign tourists which are only 1.23 per cent may be increased to 3 per cent. You are spending Rs. 80 crores on promotion, but the NITI Aayog says the staff is not equipped adequately to support the promotion. So, that has to be looked into. Of course, the new tourism policy has about 8 strategic areas which are very good in promoting tourism but they really need support. As I suggested, the Standing Committee Report, the NITI Aayog's comments and reports are something the Ministry needs to look into. I do not want to elaborate too much on that due to lack of time.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Your time is already over.

SHRI K.R. SURESH REDDY: Lastly, I am concluding with Telangana, Sir. One request, since I initiated, I will make. We have the Bhadrachalam temple in Telangana which is one of the biggest Shri Ram temples. श्री राम के नाम पर 'PRASAD Scheme' के तहत, I request the hon. Minister to give the sanction to the proposal sent by the Government of Telangana for this. And the Yadadari temple which is coming up in Telangana at a cost of almost Rs. 2,000 crores is something which needs to be supported by the Government of India. Thank you, Sir.

श्री शिव प्रताप शुक्ल (उत्तर प्रदेश) : मान्यवर, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा का अवसर दिया। श्रीमन्, भारत एक ऐसा देश है, जिसके लिए निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि पर्यटन और सांस्कृतिक दृष्टि से सदैव यह बहुत महत्वपूर्ण रहा है। यहां की संस्कृति ने पूरे विश्व को मार्ग दिखाने का काम किया है। आज स्थिति यह है कि हमारे देश ने एक आध्यात्मिक पहचान बनाई है। दुनिया में यह अकेला एक ऐसा देश है, जिसके सन्दर्भ में यह कहा जाता है कि यहां साक्षात भगवान ने अवतार लेकर लोगों को समय-समय पर संस्कृति सिखाने और समझाने का काम किया है। यहां पर राम भी रहे हैं, कृष्ण भी रहे हैं, महावीर भी रहे हैं और बुद्ध भी रहे हैं।...(**व्यवधान**)...

श्रीमती जया बच्चन : आपने देवियों का नाम नहीं लिया।...(**व्यवधान**)...

डा. अमी याज्ञिक : आपको देवियों का नाम भी लेना चाहिए था। आपके जीवन में क्या देवियों का कोई महत्व नहीं है? ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : आप इधर देख कर बोलें।

श्री शिव प्रताप शुक्ल : मुझे लगता है कि बिना जया जी का नाम लिए, मुझे कुछ नहीं कहना चाहिए।

"या देवि सर्वभूतेषु मातृ रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥"

"देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥"

श्रीमन्, आज मैं आदरणीय प्रधान मंत्री जी को इसके लिए बधाई दूंगा कि उन्होंने देश को उसी तरह से रखा है। मैं माननीय पर्यटन मंत्री, श्री प्रहलाद सिंह पटेल जी को भी धन्यवाद देते हुए यह कहना चाहूंगा कि 2018-19 का जो टोटल जीडीपी था, उसमें टूरिज़्म का पांच प्रतिशत का योगदान रहा है। यह सेक्टर 13 प्रतिशत रोज़गार उत्पन्न करता है।

महोदय, 2014 में जब आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी की सरकार आई थी, तब टूरिज़्म में हम 65वें स्थान पर थे, लेकिन 2019 में हम 34वें स्थान पर पहुंच गए। मैं समझता हूं कि जिस प्रकार से भारत सरकार ने टूरिज़्म पर ध्यान दिया है, उसे देखते हुए बहुत जल्दी हम पूरे विश्व में भारत की संस्कृति को डेवलप करते हुए प्रथम स्थान पर रहेंगे और भारतीय संस्कृति निश्चित रूप से यह साबित कर देगी।

श्रीमन्, पिछले पांच वर्षों में पर्यटन के क्षेत्र में हमारा बजट बढ़ा है। 2021-22 के बजट में टूरिज़्म सेक्टर को 2,026.77 करोड़ रुपये का बजट ऐलोकेशन दिया गया है। अगर हम पिछले वर्ष के बजट से इसकी तुलना करें, तो 2020-21 में टूरिज़्म सेक्टर के लिए 1,260 करोड़ रुपये का बजट ऐलोकेशन दिया गया था। इस वर्ष भारत सरकार ने इसमें 61 प्रतिशत की वृद्धि की है। पर्यटन के क्षेत्र में लोगों को भारत की तरफ आकर्षित करने के लिए यह एक अद्भुत काम हुआ है। पर्यटन में ढांचागत सुधारों के लिए 950 करोड़ रुपये दिए गए हैं। इन्फ्रास्ट्रक्चर में सुधार होने से देश तथा विदेश के पर्यटकों को काफी फायदा होगा, वे अवश्य ही आकर्षित होकर भारत की तरफ आएंगे।

मान्यवर, जब से यह सरकार आई है, तब से पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए air connectivity को बहुत अधिक बढ़ाया गया है। साथ ही यहां पर हमारे माननीय रेल मंत्री जी भी बैठे हुए हैं, इन्होंने ऐसी कई प्रकार की रेलों की कनेक्टिविटी दी है, जिससे जगह-जगह जाकर लोग तीर्थाटन कर रहे हैं। आज यहां इस प्रकार की कनेक्टिविटी डेवलप हुई है कि पूरी की पूरी गाड़ियां भरी हुई जा रही हैं। टूरिज़्म एक ऐसा सेक्टर है, जिसमें गरीब से लेकर अमीर तक, सभी तरह के लोग जुड़े हुए हैं। अगर देखा जाए, तो जहां बड़े-बड़े लोग इससे जुड़ कर लाभ प्राप्त कर रहे हैं, वहीं स्थानीय स्तर के छोटे-छोटे लोग भी टूरिज़्म से जुड़ कर अपने परिवार को चला रहे हैं, उनका पालन-पोषण कर रहे हैं। श्रीमन्, हमें गर्व है, अभी कोविड-19 महामारी बीती है, पूरा संसार इससे परेशान हो गया था, लेकिन उसके बावजूद भी पूरे सदन को इस बात की सराहना करनी चाहिए कि आदरणीय प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस प्रकार से, त्वरित गति से कार्रवाई की कि आज भारत उससे उबर चुका है और दूसरे देशों से भी लोग अपने को कोविड-19 से बचाने के लिए भारत आकर टूरिज़्म को बढ़ावा दे रहे हैं, यह हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि रही है, जो हमारे वैज्ञानिकों ने, हमारे प्रधान मंत्री जी ने करके दिखाया, जिसकी चर्चा पूरे विश्व में हो रही है।

मान्यवर, हम यह कह सकते हैं कि उत्तर प्रदेश टूरिज़्म का एक बहुत बड़ा सेन्टर है। आप लोगों ने यह देखा होगा कि श्री राम मन्दिर का शिलान्यास हुआ और उस राम मन्दिर के शिलान्यास से आपने देखा होगा कि पूरी दुनिया में इसकी चर्चा हुई। अयोध्या अब वह अयोध्या नगरी नहीं रही, जिसके लिए कभी लोग यह कहते थे कि यह शापित हो गयी है, माता सीता के द्वारा इसे शापित कर दिया गया है। अब उसका वैभव बढ़ रहा है, उसकी आत्मा पूरे तौर पर लोगों को आमंत्रित कर रही है कि आओ, राम से जुड़ो। जिस तुलसीदास जी ने अपनी एक रामायण के आधार पर सबको जोड़ने का काम किया, आज उस राम की पूरी की पूरी संकल्पना को मन्दिर के रूप में आकार देने की दृष्टि से भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वहां जाकर शिलान्यास किया और अब वह धीरे-धीरे धरातल पर अपना रूप ले रहा है। ..(**व्यवधान**)..

श्री उपसभापति: प्लीज़, बैठकर आपस में बातें न करें।

श्री शिव प्रताप शुक्ल: शायद आप लोगों ने इसे सुना नहीं होगा, ध्यान भी नहीं दिया होगा...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: प्लीज़, बैठकर आपस में बात न करें और न चेयर पर टिप्पणी करें, प्लीज़।

श्री शिव प्रताप शुक्ल: मैंने तो पहले ही मातृशक्ति को प्रणाम किया है और शायद अब इतनी जानकारी हो जानी चाहिए कि जिस अशोक वाटिका में माता सीता को ले जाकर रावण ने रखा था, यह कहा जा रहा है कि उसका पत्थर भी आकर अयोध्या में लगने जा रहा है, इस नाते माता सीता अपने आप वहां दिखाई देंगी और आप लोगों को कहने का मौका नहीं मिलेगा।

महोदय, मैं समझता हूं कि अयोध्या नगरी का स्वरूप बदलने का बीड़ा माननीय प्रधान मंत्री जी ने उठा लिया है। उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्य मंत्री, योगी आदित्यनाथ उनके निर्देशित कार्यों को पूरा कर रहे हैं। मैं आज बधाई देना चाहता हूं कि आज ही के दिन उत्तर प्रदेश सरकार का चार वर्ष का कार्यकाल पूरा हुआ है। योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में काम करते हुए उत्तर प्रदेश सरकार को चार वर्ष पूरे हुए हैं और उनके नेतृत्व में उत्तर प्रदेश का बहुमुखी, चतुर्मुखी विकास हो रहा है। आदरणीय प्रधान मंत्री जी लोक सभा का चुनाव उत्तर प्रदेश से लड़ने के लिए आए। आपने यह देखा कि जब वे काशी गये तो बहुत सी बातें आईं, लेकिन आज अगर किसी को जाकर देखना हो तो वह देखे कि काशी विश्वनाथ का कॉरिडोर माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में कितना भव्य बन चुका है कि आज गंगा, जो कभी शिव की जटा से निकली थी, उसी गंगा का आज ऐसा मार्ग बन गया है कि वह काशी विश्वनाथ में आकर पूरे तौर पर दर्शा रही है और इसका श्रेय यदि किसी को दिया जाएगा, तो निश्चित रूप से हम यह कह सकते हैं कि भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी को दिया जाएगा। वहां की जनता और प्रशासन ने जितना पैसा मांगा, उतना पैसा भारत सरकार ने वहां देकर उन लोगों से कहा कि इसमें मदद करो और सभी लोगों ने उसमें मदद की तथा गंगा से लेकर काशी विश्वनाथ मन्दिर तक कॉरिडोर बनकर पूरी तौर पर तैयार है। श्रीमन्, इसी का परिणाम है कि भारत में पर्यटकों की संख्या बढ़ी है, हम यह कह सकते हैं। भारत में 2019 में 10.89 मिलियन विदेशी पर्यटक आये और भारतीय लोग जो पर्यटक के रूप में रहे, वे तो रहे ही। पर्यटन से 2019 में हमें 2 लाख, 10 हज़ार, 981 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई, उसमें घरेलू पर्यटकों की संख्या 1,854.9 मिलियन थी। अक्टूबर, 2020 में जारी Indian Tourism Statistics Report के अनुसार 2019 में घरेलू पर्यटकों को आकर्षित करने के मामले में उत्तर प्रदेश प्रथम स्थान पर रहा, जबकि विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के मामले में उत्तर प्रदेश तृतीय स्थान पर रहा। अब जब वहाँ राम मन्दिर बन गया, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर बन गया, मैं उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूँ, तो मुझे लगता है कि स्वाभाविक रूप से वह आकर्षण और बढ़ेगा तथा हो सकता है कि वह तीन नम्बर से घट कर दो नम्बर या एक नम्बर पर आकर खड़ा हो जाए। इस संदर्भ में सम्पूर्ण भारत में 23.1 प्रतिशत हिस्सा उत्तर प्रदेश का है। जब कोरोना के समय में सब लोग घर बैठकर परेशान हो गये थे, तब भी हमारे यहाँ इस प्रकार की व्यवस्था हो रही थी कि लोग बाहर जायें, वैसी व्यवस्था वहाँ की गयी। आज गोवा, केरल में भी भारी संख्या में लोग जा रहे हैं और वहाँ पर जाकर पर्यटन को बढ़ावा दे रहे हैं।

महोदय, लोग जम्मू-कश्मीर में जाने से डरते थे। जब धारा 370 खत्म हो गयी, वहाँ की स्थिति बदली और आज विदेशी लोग आ-आकर जम्मू-कश्मीर को देखना चाहते हैं कि आखिर वह जम्मू-कश्मीर पहले क्या हो गया था! ...(**व्यवधान**)... आज लोग जम्मू-कश्मीर में जा रहे हैं और वहाँ से वापस आकर दिल्ली में उसकी प्रशंसा कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... वे उसके बदले स्वरूप को देख रहे हैं। जहाँ पर गोलियाँ चला करती थीं, आज वहाँ केसर की क्यारियाँ महक रही हैं। आप भी महकिए। हम इस सदन में आप लोगों को भी आमंत्रित करते हैं, महकने के लिए तैयार हो जाइए। ...(**व्यवधान**)... इस बदलाव में पूरे तौर पर कहीं न कहीं आदरणीय प्रधान मंत्री जी का नेतृत्व रहा है, हमारे माननीय गृह मंत्री जी का साहस रहा है और आप सभी लोगों का सहयोग रहा है। मैं आपके सहयोग को भुला नहीं सकता हूँ, क्योंकि बिना आपके सहयोग के यहाँ कुछ पास ही नहीं हो सकता है। आप लोगों ने वह सहयोग दिया, इसके लिए मैं आपका भी आभारी हूँ। जो लोग नहीं मानते होंगे, वे मन में दबाये रहेंगे, खुलेंगे नहीं।

मान्यवर, भारत में अनेक बातें हुई हैं। अगर प्रदेशों को देखा जाए, तो जिनके नेतृत्व में Statue of Unity, सरदार पटेल की दुनिया की सबसे बड़ी प्रतिमा केवड़िया में लगी, गुजरात को दुनिया का सबसे बड़ा स्टेडियम प्राप्त हुआ, इससे भी अब गुजरात की तरफ आकर्षण बढ़ेगा। मैं यह कह सकता हूँ, इस सदन में गर्व के साथ कह सकता हूँ कि अगर आज देश में कोई Brand Ambassador के नाते है, तो इस देश के आदरणीय प्रधान मंत्री हैं, जिनको नरेन्द्र मोदी के रूप में जाना जाता है। इस सदन में बड़े गर्व के साथ इस बात को कहा जा सकता है। श्रीमन्, हमारे यहाँ अनेक तीर्थ हैं - श्री बद्रीनाथ, श्री केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, हेमकुंड साहिब, गुजरात का सोमनाथ, द्वारिका, ओडिशा का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क सूर्य मंदिर, चिल्का झील, दक्षिण का रामेश्वरम मंदिर, कन्याकुमारी, तिरुपति बालाजी, महाराष्ट्र का सांई मंदिर, असम का कामाख्या मंदिर, झारखंड का देवघर, वाराणसी का सारनाथ मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर, विंध्याचल मंदिर, गया का बोधगया और बंगाल का तारकेश्वर नाथ और काली मंदिर।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : कृपया बैठ कर आपस में बात न करें। कृपया आप चेयर को address करें।

श्री शिव प्रताप शुक्ल : महोदय, ये सभी दर्शनीय स्थल हैं। इस देश ने तो सूफी संतों को जन्म दिया है। मगहर एक छोटा सा स्थान है और संत कबीर ने वहाँ जाकर उसको इतना बड़ा बना दिया, लेकिन हर सरकार ने उसकी उपेक्षा की। चूँकि वह हमारे बगल का स्थान है, इसलिए मैं इसके लिए आदरणीय प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद देना चाहूँगा कि उन्होंने पहली बार कबीर के स्थल, मगहर जाकर उसका उत्थान किया, उसका जीर्णोद्धार किया। अगर कबीर को समाज में किसी ने बताने का काम किया, तो वह आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी हैं। यह सदन इस बात का गवाह है कि लोग डा. अम्बेडकर की कसमें खाते हैं, आरक्षण के संबंध में डा. अम्बेडकर को संविधान मान लेते हैं, लेकिन किसी ने उनको 'भारत रत्न' देने का काम नहीं किया, किसी ने उनके पंचतीर्थ पर ध्यान नहीं दिया। अगर किसी ने दिया, तो वह आदरणीय प्रधान मंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं, जिन्होंने पंचतीर्थ की भी स्थापना की और जहाँ उनका जन्म हुआ था, यानी महू को भी विकसित करने का काम किया तथा लंदन में वे जहाँ पर थे, उसको भी विकसित करने का काम किया। यहाँ तो केवल नाम जपा जाता है। हाँ, यह ठीक है, क्योंकि हमारे यहाँ कहा भी गया है कि

नाम जपने से कुछ मिलता है, इसलिए ये उसी को जप कर पाना चाहते हैं, लेकिन उससे वोट नहीं मिलने वाला है। यहाँ तो राम का नाम जपोगे, तो वोट भी मिलेगा और मुक्ति भी मिलेगी - ये दोनों बातें होंगी। आप किसके लिए तैयार हैं, यह आपको तय करना पड़ेगा।

श्रीमन्, यह सच है कि पर्यटन के क्षेत्र में भारत ने अपना एक अद्भुत स्थान प्राप्त किया है और उसी का परिणाम है कि हम दिन-प्रतिदिन इसको विकसित करते चले जा रहे हैं। मैं इसके लिए माननीय मंत्री जी को धन्यवाद दूँगा कि वे किस प्रकार से आगे जा करके, आगे बढ़ करके संस्कृति और पर्यटन, इन दोनों को एकाकार करके भारत को विकास की तरफ ले जा रहे हैं।

[**उपसभाध्यक्ष (डा. एल. हनुमंतय्या)** *पीठासीन हुए*]

श्रीमन्, दक्षिण भारत से लेकर उत्तर भारत के ऐसे अनगिनत मंदिर हैं, जिनका इतिहास हज़ारों साल का है। कांचीपुरम के मंदिर, चिदंबरम मंदिर, अरुणाचलेश्वर मंदिर, बेलूर, तिरुपति, पत्तदकल मंदिर - ये सब मंदिर हैं। मान्यवर, यही बटेश्वर है, जो आदरणीय प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्मस्थान है। मैंने इस विषय को यहाँ भी उठाया था। माननीय मंत्री जी यहाँ पर हैं, ये मध्य प्रदेश के रहने वाले भी हैं, मैं इनसे इस बात का आग्रह करूँगा कि उस पर ध्यान दिया जाए। वह 200 मंदिरों का समूह है। अगर 64 योगिनियों का केन्द्र किसी को माना जाता है, तो बटेश्वर को माना जाता है। मेरी माननीय मंत्री जी से यह प्रार्थना है कि उस मंदिर को विकसित किया जाए। अगर उस मंदिर को विकसित किया जाएगा, तो वह पर्यटन का बहुत बड़ा स्थल बन सकता है। न जाने कितनी मुद्राएं आपके पास आ सकती हैं। उसका प्रचार और प्रसार करने की जरूरत है। मैं एक बात और कहकर अपनी बात को निश्चित ही पूरा करूँगा कि अन्य सरकारों के द्वारा जिस प्रकार से पर्यटन को बढ़ाना देने के लिए विचार व्यक्त किए जाते हैं -- चाहे वह आगरा का ताजमहल हो, चाहे वह अजमेर का सूफी स्थल (दरगाह) हो, चाहे वह फतेहपुर सीकरी हो, इन सबको कहीं न कहीं योजनाबद्ध तरीके से प्रचारित-प्रसारित करना चाहिए। अगर भारत की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए हम इसे विज्ञापित करेंगे, तो कोई कारण नहीं बचता है कि भारत प्रथम नंबर पर न आ पाए। इसके साथ मैं आज इस डिस्कशन में अपनी बात को समाप्त करता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI G.C. CHANDRASHEKHAR (Karnataka): Sir, thank you for the opportunity to speak about the Demands for Grants of the Department of Tourism. Our Indian culture preaches 'Atithi Devobhava' meaning 'Equating a guest to God'. We need to preserve it by building the trust of the tourists. And, also 'Travel makes the man wiser and make the country he visits richer'. Hence, our focus on tourism is most important. The Ministry had projected a demand of Rs.3,178.06 crores. But, in the current financial year 2021-22, the Budget allocation is Rs.2,026.77 crores which is again 19 per cent lesser than last Budget, 2020-21, which was Rs.2,499.83 crores and also Rs.1,111.29 crores lesser compared to the last demand made by the Department. If we look at the difference between Budget Estimate and Actual

Expenditure yearwise, in 2018-19: Rs.47.47 crores were not spent; in 2019-20, Rs.789.01 crores were not spent; and in 2020-21, Rs.1,239.83 crores were not spent. On the one side, we are talking about the Budget allocation and, on the other side, the money that has been allocated, has not been used. Sir, totally for these three years, whatever the Budget has been allocated this year, around the same amount in the last three years, they have not spent. This is the situation. The Government has announced some of the new schemes; some of the important programmes are under review by the Prime Minister's Office itself. The examples are: Swadesh Darshan Scheme; sanctioned 76 projects in 2014-15 but till now, only nine projects have been completed. Another 67 projects are still pending. Although, Rs.5,667.40 crore have been sanctioned for all these schemes, as on today, the actual expenditure is Rs.3458.30 crores. This is the status of projects even when the Prime Minister's Office itself is reviewing the projects. Sir, can you just imagine the status of the other schemes which the Prime Minister's Office is not overlooking? One more important thing is that as per the Standing Committee of Tourism's report, March, 2021, the underutilized fund of Rs.1,239 crores has been surrendered to the Ministry of Finance without spending. Rs.1,239 crore is a huge amount. What I am quoting here is from the Standing Committee's report. To promote the domestic tourism, the Government has introduced the PRASAD Scheme in 2015. But, only 11 out of 26 projects have been completed. As per the report of the Standing Committee, the estimated expenditure of Rs.1,160.55 crores has been allocated, though the actual release, as on today, is only Rs.629.50 crores. Sir, tourism is the second largest foreign exchange earners in India. The tourism industry employs more than 75 million people, both skilled and unskilled. Tourism is the largest service industry in India which contributes 10 per cent of national GDP. Sir, Indian tourism industry accounted for Rs. 16.91 lakh crores and 9 per cent of the total employment in India. But, this industry hit badly by Corona and there is an estimated revenue loss of Rs. 95,000 crores in both organized and unorganized sectors of this industry. Sir, Corona affected 75 million people with zero foreign exchange earnings in the last year and less than 25 per cent of the pre-pandemic revenues, the sector is facing crisis. Sir, Indian Association of Tour Operators has estimated that the hotel, aviation and travel sectors collectively incurred loss of Rs. 85 billion due to the restrictions imposed on travel and tourism. Sir, the Indian Domestic Travelers and FTAs witnessed a significant decline in 2020. India's foreign tourists (FTA) arrival stood at 10.9 million and the foreign exchange earnings stood at Rs. 2,10,971 crores during 2019. Sir, another study projected that Indian tourism industry is going to book a revenue loss of Rs. 1.25 trillion which is 40 per cent loss compared to 2019. As per the information shared by

Tourism Secretary in Parliamentary Standing Committee on Transport, Tourism and Culture, 2 to 5.5 crore employed in the sector, directly or indirectly, have lost their jobs. This is a very huge number. The Secretary also informed the panel that revenue loss was pegged at Rs. 1.58 lakh crores, that is also a huge amount. Sir, tour operators and agencies are expected to incur a loss of Rs. 35,000 crores with hotels likely to *See* 80 to 85 per cent loss. Sir, but when there was a question asked in Lok Sabha regarding the revenue loss in Tourism sector, the Ministry of Tourism said, "It does not maintain data on revenue generated and the Department yet to conduct the NCAER survey". Sir, if the Ministry does not maintain the data of the people whose livelihood is affected, how can we trust this Government and how can this Government take care of the people properly, you tell me, Sir. I would like to mention some suggestions. Since the Tourism Department does not have its own assets and hospitality entities owned are not maintained well-- you know that very well all over the country-- so, the tourists prefer private entities. So, the Government needs to adopt the new tourism strategy with PPP model. I propose a regulatory body which monitors the products and services for the international and domestic tourists where the grievances can be addressed. Sir, this regulatory body should be given a power to cancel the recognition and also to encourage the service provider and keep up the brand value of India.

Sir, under 'UDAN' Scheme, India has a potential for air connectivity with airports across the States. Charter tourism should be encouraged by simplifying the process. Currently, we need to take permission from many Departments, like Aviation Department, DGCA, Fire, PWD, local DC, Foreign Affairs, etc., including the State in order to land a charter flight. Sir, I would like to quote an example here. During the Corona Pandemic, although 'Vande Bharat Mission' flights were arranged for the repatriation across the globe, but, medical students, those who were studying in Russia from the State of Karnataka were finding it difficult to take a flight. Finally, we made arrangements for charter flights despite Corona Pandemic. But, it was very hard to get permission from many Departments to land a single charter flight. Also, students of our State could not speak Hindi; the Indian Embassy in Russia had denied the permission to those students to board the 'Vande Bharat Mission' flights. Those flights were flying via Moscow-Delhi to Bengaluru. The Embassy had asked for an apology regarding this issue, regarding this discrimination that they have done. There were reports in this regard. It came in national newspapers also. Sir, when Indian Embassy could not take care of our students from our country during the time of crisis, how do we expect some of our Embassies to handle the foreign tourists? Sir, I propose to have a single window process of permission to the charter flight to ease

the process. As the tourist destinations are not in direct control of the Tourism Department, we need to create SEZ for tourism in and around tourist destinations. Sir, at present, we are having in the entire country only 47 institutions of hotel management, 14 food craft institutes and one central IHM under implementation, there is a huge gap of skill in this sector. The training programmes such as 'Hunar Se RozgarTak' and Entrepreneurship programmes failed to meet the target of financial year 2020 and again there is no data on the skilled manpower and supply for the hospitality sector. I would like to propose to classify hospitality under the RBI infrastructure leading norm criteria, industry status to hotels, restaurants and resorts across the country and be included in the Concurrent List. Sir, MAT waiver at least for next one year is required. Sir, IGST billings to hotels for Corporate and MICE bookings are also very important. Sir, a single window clearance for all the approvals would ease the process of establishing travel and hospitality ventures and more investments in this space. There are different rates of GST for hotel accommodation starting from 0 per cent to 18 per cent depending upon room tariff. GST on room tariffs above Rs 7,500 is 18 per cent. The Government of India should consider reduction in GST rate on room tariff between Rs.1,000 and Rs.7,500 from the current 12 per cent and 18 per cent to 5 per cent for at least for one or two years. Tour operators and travel agents are required to pay GST for supplying specified services. It can be considered to be reduced. Otherwise, it is very difficult for these people to live in this business now. A tax holiday may be introduced for a specified period to safeguard the interest and revival of such service providers. Also, online tax aggregators are required to collect tax at source while remitting payments to airlines and hotels. Therefore, exemption on such levy of TCS must also be considered to avoid additional burden of taxes. Sir, the Government is claiming there is a revival of MSME sector by providing packages through banks. Sir, we know how banks are giving loans and how difficult it is to get loan from the banks. Many MSMEs have been closed today because of this policy and also because of the banks. Sir, at least, the unorganized sector workers, those who are earning about Rs.300 to Rs.500 per day by selling some of the items at tourist places, need to be taken care immediately. Sir, the Governments across the world are trying to review back visitors from domestic and international markets, and I would like to quote a few examples in this regard. Hong Kong and Singapore have come up with a digital initiative of 'travel bubble'. The travel bubble will allow people to move quarantine free in each direction and a total of 200 residents from each city will be able to travel on one daily basis. Sir, the European countries have launched a website with travel rules for Europe. The website provides information on the coronavirus rules of individual European countries in 24 languages. Even in India also

we have 22 Official Languages, we are not getting information in these 22 languages. We are getting information only in two languages, that is, English and Hindi. Japan has launched its ambitious "Go-To" Campaign which aims to provide subsidies of up to 50 per cent on all domestic travels. Greece has also effectively mitigated the impact of the pandemic and the country reduced the VAT on all modes of transport. Sir, with this, I would like to conclude my speech, and I hope the Government will revive and help to save the industry. Thank you.

SHRI S.R. BALASUBRAMONIYAN (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, Sir, thanks for giving me an opportunity to speak on tourism. I take this as an opportunity to express my thoughts and views on the tourism sector in India. The Novel Coronavirus has affected people and businesses worldwide, triggering a global economic crisis. In this aspect, the tourism sector is not left behind. The pandemic has not only affected the foreign exchange earnings (FEE) but also affected various regional developments, job opportunities, thereby disrupting the local communities as a whole. As there has been a substantial decline in the arrivals of overseas tourists in India in 2020, the paper aims to predict foreign tourists' arrival in India and FEE, using artificial neural networks. We need to analyse the impact of Covid-19 based on the current scenario considering with and without lockdown in terms of loss and gain in FEE. This will help us to make necessary strategic and operational decisions, along with maximizing the FEE.

The Covid-19 bas triggered a concern worldwide in early January 2020, and by the end of March 2020, the outbreak had infected several people globally. Tourism and hospitality businesses are profoundly affected by Covid-19. Due to the Covid-19 pandemic, the travel and tourism industry's employment loss is predicted to be 100 million worldwide. Nearly half of them are in India. The pandemic has not only affected economically but also socially.

As the number of infected cases rose throughout the nation, and with the implementation of certain measures and campaigns like social distancing, community lockdowns, work from home, stay at home, self or mandatory quarantine, curbs on crowding, etc., pressure is created for halting the tourism industry/business. This change in the current system has led to the beginning of therecession and depression, seeking a transformational change in society.

The tourism industry is the most dynamic sector that benefits many other sectors like lodging, catering, transportation by air, road and sea, retail, entertainment, etc., and were very badly affected due to Covid-19 restrictions.

It has been estimated that there is a drop of international tourists by about 80 per cent, causing a loss in export revenue of US$ 1.2 trillion and representing the largest decline in the tourism job cuts. Additionally, the drop in the tourists' demand has led to severe financial problems. India is one of the developing nations known for its uniqueness in its tradition, culture and unparalleled hospitality. It is a major destination for many international tourists, creating several employment opportunities and generating enormous taxes.

The Indian tourism industry can be divided into three major segments such as international inbound tourism, domestic tourism; and outbound tourism. The Indian tourism industry has created about 87.5 million jobs, with 12.75 per cent of total employment, thereby contributing INR 194 billion to India's GDP. There is a 70 per cent decline in overseas tourists' arrivals in India in March 2020, compared to last year. It has been estimated that there will be about 40 million direct and indirect job losses in India, with an annual loss in revenue of around US$ 17 billion in India. Tourism and its allied sectors is a major source of revenue and employment in our country. It is a generator for employment, income, tax collections and foreign exchange earnings. The tourism industry became highly competitive. Hence, accurate tourism demand forecasting is important to make an appropriate strategic and operational decision. Strategic decisions of planning for opening places of attractions, modes of transport, accommodation, and tourism promotion for which colossal investment is required. The Government needs to allocate more funds and spend judiciously to promote tourism sector in the coming years. In contrast, operational decisions are the number of parking areas, attendants, number of shuttle buses, hours of service per day and hiring of employees. Accurate tourism demand forecasting is a challenging task. Forecasting tourism demands help to identify the future pattern, which guides planning and policy formation. Forecasting plays a crucial role in tourism planning. Moreover, accurate forecasting helps managers and practitioners make appropriate decisions in policy-making, staff and capacity utilization and management, resource management, pricing strategies, etc. during disruption to reduce the risk and uncertainty. Hence, tourism forecasting is one of the significant areas of research. It needs to be encouraged by both the Centre and the States. The Indian tourism and hospitality industry is now gawking at a likely job loss of around 50 million. The Governments across the world are trying to woo back visitors from domestic and international markets. Travel and tourism companies will have to recuperate the trust and confidence of people in the recovery period to travel again after the pandemic. Due to COVID-19, tourism is such a highly affected sector and may remain affected in the long term, i.e. approximately more than two years.

Hence, in this scenario, it is necessary to measure the losses due to pandemic so that policies can be redesigned to manage tourism activities. There is a fall in foreign tourists' arrival rate by 80 per cent from February to March 2020 and hence, fall in foreign exchange earnings by 70 per cent has a significant negative impact on the economy. Therefore, the Government of India and the State Governments must try to get accurate forecasting of the number of foreign tourists, and foreign exchange earning is crucial in managing tourism activity. However, predicting foreign tourists' arrival in India and its impact on the revenue in terms of foreign exchange earnings are scarce. I urge upon the Government to look seriously into this area. The hospitality industry has faced umpteen number of challenges and issues in the recent past. And Covid-19 had literally buried the industry business development beyond redemption. The biggest trends coming for the hospitality industry are sustainability, global perspective, finding balance with new lodging and boarding options and growing demand. All the five industries of tourism accommodations, i.e. food and beverage services, recreation and entertainment, transportation and travel services were affected very badly in the last one year due to Covid-19 and may likely continue for next few years. These key elements are known as the five A's: Access, Accommodation, Attractions, Activities, and Amenities. The Government needs to focus on each one of the five elements with utmost care; otherwise, in the next three years if the Covid-19 situation won't improve, we may very well write an obituary citation to this glorious industry which made India the most sought after destination among the international tourists. Sir, in our vast country, around three crore people were badly affected as their life depends, directly or indirectly, on tourism industry. I urge upon the Government to devote more time and energy and also design schemes with generous allocation of funds to make tourism and it's allied industries to not only survive, but also to thrive. Thank you.

SHRI SUJEET KUMAR (Odisha): Sir, we all know that tourism is a major engine of economic growth globally and in our country, India as well, and is an important source of employment and foreign exchange for our country. It has huge multiplier effect in terms of increased spending, in terms of increased economic activity, in terms of generating employment and eradication of poverty as well. Tourism contributes, according to many studies, about five per cent of India's GDP and accounts for about 12 per cent of the jobs that are created in the country. The tourism industry accounts for 8.5 crores, i.e. 85 million direct and indirect jobs in our country.But, due to COVID-19, the year 2020 has been one of the worst years for tourism industry. The World Tourism Barometer of the UN's World Tourism

Organisation noted that international arrivals globally fell by 7.4 per cent and, I think, the Indian numbers would be close to that. I do not have the numbers of India, but they should be close to that.

Sir, the Ministry has been allocated only Rs. 2,027 crores for 2021-22 which is an increase of 22 per cent from the actual expenditure of 2019-20, but it is a 19 per cent reduction when compared to Rs. 2,500 crores allocation made in the financial year 2020-21. Some of the previous speakers also expressed concern about this substantial reduction. Sir, reduction of 19 per cent is a substantial reduction, particularly during the COVID-19 period, over the previous year's allocation. Is this not going to deliver a blow to tourism industry which is already reeling under huge losses due to COVID-19 crisis? I must also mention that the Budget for the Ministry still constitutes only 0.06 per cent of the total expenditure Budget of the Union Government in 2021-22. Allocation to the Ministry has consistently been lesser than the projected requirement and demand. This is undesirable since the sector has huge potential to stimulate economic activities, because of its linkage with agriculture, logistics, handicrafts, transport, etc.

Sir, while the Government did roll out economic relief packages for several sectors and industries post-COVID, the tourism sector has been noticeably absent and the Union Budget missed a golden opportunity to address the crisis in this sector. The Government should have provided and can still provide a growth stimulus to this industry which has impacted due to COVID-19. It should have announced tourism sector-specific package under Atmanirbhar Bharat Package and save, at least, 30-35 million jobs which are at the risk of extinction out of 8.5 crore jobs that I spoke about employed directly and indirectly by the industry.

Sir, foreign tourist arrivals in the country is an issue. It is an issue which we have been observing over the last many years and it particularly concerns me as it is not very encouraging. It is only 1.23 per cent in 2019 of global tourism. I do not want to quote numbers for 2020 as it is irrelevant due to pandemic.

Sir, we have 40 UNESCO World Heritage Sites in India. We have the 6th largest number of sites in the world. However, India's rank in Travel and Tourism Competitiveness Index of the World Economic Forum is only 34! We are much below than small nations like Singapore and South Korea which stand at 17th and 18th respectively. This indicates how underutilized tourism potential in our country is. India needs to work on two particular parameters. The first one is enabling environment which includes hygienic conditions, safety and security of tourists, particularly women tourists visiting the country where it ranks 98th in the index, and also needs to work on improving tourist service infrastructure where we are ranked

very low at 109! It is close to Pakistan which is ranked at 112. The NITI Aayog has targeted to increase the international tourist arrivals to India to 3 per cent of the total global tourists. With this poor tourism infrastructure and poor enabling conditions like hygiene, poor security for women tourist, etc., how do we achieve this 3 per cent?

The increased allocation to tourism infrastructure, which an hon. Member was talking about, though encouraging, is not enough. It is not even Rs. 1,000 crores. We need substantially more than that and this is only possible when there is increased allocation to the Ministry itself. Sir, Rs. 2,000-odd crores is not just enough for the industry.

Sir, connectivity is another key issue which can unlock a huge inbound tourist potential in our country. Railways can play a crucial role in promoting tourism in India because of its wide reach. It also provides economic and eco-friendly means of transport across the country. Railways can also tap into numerous pilgrimage centres across the country. There should be, in my view, representation for tourism in the Railway Board which is not there currently. It helps them to frame tourism-related policies. In case of connectivity by road and air, closer coordination must be established with the Ministry of Civil Aviation and the Ministry of the Road Transport and Highways.For instance, the Ministry of Tourism has identified 50 important tourist destinations where road connectivity must be established. Of these, 23 are within the purview of the Ministry of Road Transport and Highways, where progress should be monitored by the Ministry of Tourism. Similarly, 46 tourism sector routes were included under the UDAN-3 Scheme. However, only 21 of these have been operationalized, as of February, 2021. I request the hon. Minister, through you, Sir, to look into these aspects.

Finally, Sir, I would like to talk about tourism in the context of my state, that is, the State of Odisha. *Dhanu Yatra* is an ethnic, theatrical presentation of Krishna Leela, over a period of 11 days. And, it is word's largest open air theatre in the world. I request all the hon. Members to visit *Dhanu Yatra,* at least, once in their lifetime. It should be recognized as a National Festival, and should be included in the list of fairs and festivals of India.

Secondly, an institute of hotel management should be established in Western Odisha, either at Sambalpur our Rourkela, to meet the growing needs of the hotel industry for quality manpower.

Thirdly, Odisha is the place that gave birth to a new religious cult, called, the Mahima Dharma, which talks about international well-being. It was popularized by Sant Kabhi Bheema Bhoi, whose immortal words are: *'Praninka arata dukha apramita, dekhu dekhu keba sahu. Mo jiban pachhe narke padi thau, jagata udhhara*

hau', which means, "Witnessing the plethora of plights on earth how one could bear with; let the world get redeemed at my cost". These immortal words are inscribed on the wall of the United Nations Organisation Hall in various languages. So, Sir, his place of work, Joranda and Sonepur, should be developed to attract world attention.

As we all know, India is the origin of Buddhism. There are many Buddhist sites in Odisha that still remain neglected. The Ratnagiri-Lalitgiri-Udaigiri clusters which were once the site of Puspagiri and Parimalgiri Universities, as recorded by the Chinese traveler Huen Tsang, should be developed to attract more number of Buddhist tourists, particularly from East & South-East Asia; and, a Central University for the study of Buddhist religion and philosophy should be established by the Ministry of Education, in collaboration with the Ministry of Tourism.

Finally, I would like to request the hon. Minister to accord National Maritime Heritage Festival status to the *Bali Yatra*. It is held annually in the historic city of Cuttack to commemorate the glorious tradition and rich maritime history of the seafarers of the erstwhile kingdom of Kalinga, which is the former name of Odisha, who used to travel to the places as far as Bali, Papua New Guinea, and even Australia, for trade and commerce. As India looks to the East, and we are talking about the 'Act East Policy', it would be appropriate and timely to accord national status to this glorious festival.

With these words, I conclude, Sir. Thank you very much.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Hon. Members, I have a request here that Shri K.C. Ramamurthy wants to leave early. He has requested to allow him to speak out of turn. Can I permit him to speak now?

SOME HON. MEMBERS: Yes, Sir.

SHRI K.C. RAMAMURTHY (Karnataka): Mr. Vice-Chairman Sir, I am greatly indebted to my party leaders for having given me this opportunity to participate in the discussion on the working of the Ministry of Tourism.

Sir, as mentioned by many of my friends, this House is very well aware that the world tourism has been devastated. But, I am happy that we are bouncing back. While very many countries are still registering negative growth in GDP, we have been able to turn the table and register a positive GDP growth. I am doubly sure and quite confident that our tourism sector too will bounce back and register an impressive growth, both in domestic and international tourism, at the end of this financial year.

Tourism is one such sector which really impacts the economy, since it is one of the growth engines of the economy.

Sir, let me share with this House some of the figures which show how this Government, under the able leadership of our hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi, has achieved new heights in tourism. In 2013, we were ranking 65th in the World Tourism Index. But, just in a matter of six years, we have climbed 31 ranks and now we are at 34th position. Domestic tourist visits have increased from 220 million in 2000 to around 2.3 billion in 2019. The foreign tourist arrivals in 2019 registered almost 3.14 crore visits when compared to 2.88 crores in 2018.Nothing has changed. We have the same Government machinery, we have the same agencies and we have the same tourist spots and we have the same officials. But how come this transformation took place? How could we climb up the ladder? It is because of the will that this Government has; it is because of the resolve that the hon. Prime Minister has, and it is the leadership and qualities that have brought us this distinction.

I feel, even if we achieve 10 per cent more foreign tourist growth out of 232 crore domestic visits, the contribution of tourism sector to GDP would, certainly, go up by 20 per cent. So, we can have 35 trillion dollar market by 2029. There is no denying of the fact that there is slight reduction in the Budget for tourism in the coming fiscal year. But one should understand the increase in allocation to important and crucial schemes and programmes. The allocation for promotion and publicity has gone up from Rs.590 crores in 2020-21 to Rs.688 crores in 2021-22. Out of this, Rs.524 crores have been earmarked for overseas promotion, to attract the foreign tourists, and another Rs.145 crores have been kept for domestic tourism. Out of the proposed budget allocation of Rs.2,026 crores, Rs.950 crores will be used for creation of tourism infrastructure and Rs.670 crores towards tourism promotional activities. This would certainly increase both domestic and international travel and bring in more economic activity. In addition to this exclusive expenditure by the Ministry of Tourism, we are aware of the thrust given for infrastructure in the Budget for 2021-22. Even though there is no specific mention about allocation under tourism for infrastructure schemes, the Finance Minister has given Rs.1.18 lakh crores for roads and highways; Rs.1.10 lakh crores for railways; Rs.18,000 crores to augment public bus transport, etc. Sir, I am of the opinion that this vast investment on infrastructure will upgrade and create more facilities wherever there are no facilities and will, certainly, help for better connectivity to tourist sites and places.

We celebrate the National Tourism Day on 25th January every year. The theme of this year's National Tourism Day is *'Dekho Apna Desh'.* And, pushing this theme, the hon. Prime Minister, Shri Narendra Modi, while addressing the nation

from the ramparts of Red Fort, on 73rd Independence Day last year, said, and I quote: "I know people travel abroad for holidays but can we think of visiting, at least, 15 tourist destinations across India before 2022, when we mark 75 years of freedom?" The hon. Prime Minister has rightly said that we are a country where ethnicity, practice, culture, tradition, cuisine, *vesh-bhasha* changes with every kilometer as one travels from North to South or East to West. It is not just this; with high mountains, deep seas and more than 7,600 kilometers of coastline, we are a country with distinct geography. So, the idea behind the hon. Prime Minister's observation and appeal to the people of this country is to improve the domestic tourism sector, and, once domestic tourism increases, international footfall too will automatically increase.

As I said, India is a unique and incredible country. It is unique because in one part you find chilly winter and in another part, you have scorching heat; in one part you find incessant rains and in another part, you have autumn. So, this 'natural' advantage has to be exploited in attracting tourists round the year unlike many other countries where tourism will be for a specific period. So, round the year, tourism plans and packages, State-wise, have to be prepared and they have to be widely propagated across various countries by the Ministry of Tourism.

The Ministry of Tourism has focussed on multiple activities. It can be spiritial tourism, as has been mentioned by my senior leader, Shukla*ji*. He mentioned about various spiritual centres in the country. The spiritual tourism is a very important activity which is going on.

Then, we have also medical tourism. India is rapidly emerging as medical tourism circuit in the world because of the best medical care available. The medical tourism is available at a very economical cost in our country. Sir, 'yoga and wellness tourism' is another important aspect which has been propagated by the Ministry and this has been attracting quite a sizable number of foreign tourists.

Sir, 'adventure tourism' is also increasing rapidly not only in J&K, Uttarakhand, Maharashtra but also in Goa and Karnataka. We need to chalk out a separate programme for this.

'Mining Tourism', Sir, is another very important sector. There are a large number of closed mines with 2,000-3000 feet like our K.G.F. gold mine. People will be eager to come and watch it. People will be eager to come and *See* this. We should chalk out a plan to *See* that the mining tourism is also developed.

Sir, 'cruise tourism' can be exploited and explored very well in view of India having more than 7,600 kilometres of coastline. This can be pushed along with 'beach tourism' because cruise and beach tourism go hand-in-hand. Sir, the House must be aware that the hon. Prime Minister has recently inaugurated the country's

first full-fledged international cruise terminal in Kerala. It is an indication that the Government has started taking steps to promote this sector.

Sir, 'Eco tourism and Film tourism' are areas where we have a lot of potential. Film tourism is one area where we can identify and promote the best locations for shooting to attract film production houses across the world. I am sure, once they realize that the locations are best and economical, there will be a continuous flow of production houses to shoot films in our country. At the same time, domestic production houses need to be given incentives to shoot within the country and discourage them from going outside the country for shooting.

Sir, taking this opportunity, very briefly, I would like to touch upon my State Karnataka, the initiatives that have been taken there. Karnataka has been able to attract 6 lakh foreign tourists and 22.79 crore domestic tourists in 2019. Karnataka is promoting tourism with a tagline 'One State, Many Worlds.' Tourism contributes 14.8 per cent of State's GDP and generating lakhs of direct and indirect employment. Despite the best efforts and good practices by the Government of Karnataka over a period of time, I request the Minister of Tourism to help Karnataka in promoting coastal tourism in the State in a big way.

It has 320 kilometres long natural coastline covering Uttara Kannada, Udupi and Dakshina Kannada districts and has some of the best beaches in the country, and the State has immense potential for development of coastal tourism. Sir, Karnataka is the only State in India with two Blue Flag beaches -- Kasargod and Padubidri Beach. I request the hon. Minister of Tourism to consider introducing the services of seaplanes in this long natural coastline which would definitely attract large tourist population.

Sir, Karnataka is one of the top eco tourism destinations of our country with 5 National Parks and more than 30 Wildlife Sanctuaries and Tiger Reserves. Karnataka has 17 major hill stations and 40 waterfalls, primarily in the Western Ghats. The Western Ghats are a UNESCO World Heritage Site and is one of the eight hot-spots of biological diversity in the world. To highlight these facilities, sufficient publicity needs to be given and the Ministry of Tourism should give special emphasis on this activity.

Karnataka has the potential for all types of adventure tourism activities -- terrestrial, water and air, safaris, trekking, hiking, nature trails, rock climbing, white water rafting, SCUBA diving and surfing. It has got all these facilities available. It also has several facilities for aero sports with DGCA approved flying training organizations in Bengaluru and Mysore. A coordinated programme by Government of India with Karnataka Government in this area will boost the tourism sector which will be

beneficial not only for Karnataka but also for the entire country.

Sir, I will take only a few more minutes. The Government of Karnataka has recently approved and accorded the 'industry status' to star-classified hotels in Karnataka. Establishments that have received a star classification from Ministry of Tourism, Government of Karnataka can avail the industry status benefits.

Karnataka Tourism has been promoting the State with the "Script Your Adventure" theme. The campaign received the globally renowned PATA Award, 2020 in the Marketing Campaign (State and City) category.

Sir, Golden Chariot is South India's only luxury train and has routes covering Karnataka, Kerala, Tamil Nadu and Puducherry. Golden Chariot is now open for booking and will resume operations shortly. The Department of Archaeology, Museums and Heritage has been brought within the ambit of the Department of Tourism to facilitate overall development of heritage tourism in the State. Sir, I would like to bring one important aspect to the notice of this House. Anjanadri Hills is believed to be the birthplace of Lord Anjaneya. This is located in Koppal district, closer to the Humpi Heritage site. The Karnataka Government has already drawn up plans to develop this as a pilgrimage and tourism place just like Ayodhya. This place is a very important pilgrimage centre for Ram *bhaktas*. I request the Government of India to jointly develop this mythologically sacred and important pilgrimage site of Anjanadri Hills.

Sir, one of the challenges which the Ministry of Tourism is facing and will have to be handled is the lack of infrastructure, hotels, connectivity, transportation, maintenance of sites and facilities at tourist destinations. These need to be paid greater attention. The Government of India and the State Governments should draw up a separate plan for this. Wherever possible, Three Star hotels, by Government or through public participation, should be started in all the tourist destinations.

Sir, safety and security is a very important aspect. Safety and security of tourists, particularly women tourists, is a very big challenge faced by this sector. We are at the 114th place as far as providing security is concerned. I suggest for consideration of the hon. Minister creation of an umbrella mechanism, in coordination with the Home Ministry, States and UTs, to address this issue. We have to establish police stations in all important tourism centres. There are only outposts in some tourist centres. Along with these, sufficient number of women police should invariably be posted in all these police stations. There must be a wing where specially trained policemen for guiding tourists are available.

There are many tourist spots in the country which are inaccessible. There is no doubt that ASI-protected monuments are better managed and some of the State-

protected monuments and sites are also better managed, but there are tens of thousands of monuments and historically important places which are still not covered. While infrastructure projects are planned, the important aspects of connectivity need to be taken into consideration. This is my request to the hon. Minister.

I feel that coordination between various ministries, agencies, States, UTs and Industry to promote tourism is also a big challenge. I suggest creation of an umbrella body, as suggested by my friends earlier, like CII and FICCI, with representatives from Ministry, States, UTs and Industry to make plans, policies and coordinated efforts between various agencies.

Sir, another challenge, I feel, is participation of people in protecting, preserving and taking care of our tourism sites. We need to have local coordination committees, headed by the SP and the DC, as it is in Karnataka now. There should be involvement of the local population, right from a Panchayat member to the Parliament. These members should be actively involved in all the important tourist sites' protection, preservation and maintenance. Only then would we be able to get good results. The hospitality and tourism sector accounts for nearly ten per cent of the country's GDP and employs nearly nine per cent of the country's workforce. So, if we give 'industry' status to hotels, restaurants, resorts, etc., it would help in promoting the tourism sector. Karnataka has already done this. I would request the hon. Minister to take note of this.

Sir, tourism and hospitality is not listed either in the State List, Union List or the Concurrent List. So, I suggest, for consideration of the hon. Minister and the Government of India, that tourism and hospitality may be included in the Concurrent List to make laws which would help in pushing domestic and international tourism in the country. I think there is a proposal for creating a new category of short-stay visas for those who come to India for Yoga, Ayurveda and wellness treatments. Since tourism, as a whole, is really looking for hand-holding, I am sure that this would be the ideal time to fast track this facility.

Sir, whatever policies we may formulate to promote tourism, as I said earlier, unless the local population is fully involved in that, it would not be a success.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Shri Ramamurthy, your time is over.

SHRI K.C. RAMAMURTHY: Sir, I would take only one minute more.

Sir, taxation is one more problem that this sector is facing. Hotel rooms of more than Rs. 7,500 are taxed at 28 per cent. GST would be 18 per cent if it is less

than Rs. 7,500. I would request and suggest that this should be made a uniform slab. And, as mentioned by one of my colleagues earlier, the UDAN Scheme could be extended to more and more destinations, particularly to places which are important from tourism point of view. Tourists in our country mainly come from South Asian countries, U.S., U.K., Canada, Europe, etc., but the interesting factor is that if you look at the age group of tourists, we are getting maximum tourists in the age group of 25 to 44, which constitute 40 per cent of total foreign tourist population. I feel that we have to take up promotion campaigns focussing mainly on this age group.

With these few words, I request the hon. Minister, Shri Prahalad Singh Patel, to take note of all the suggestions that we have given and *See* that our tourism sector, which has already started booming, will, as Shuklaji mentioned, definitely become No.1 in the world. Thank you, Sir.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Now, Shri T.K.S. Elangovan. You have six minutes.

SHRI T.K.S. ELANGOVAN (Tamil Nadu): Mr. Vice-Chairman, Sir, in the tourism industry, throughout the world, there is a problem and they are affected because of this Covid pandemic. It is a general position of tourism world over because most of the airports were closed. Even the air carriers, which were flying, were only bringing back native people from other places. So, it will take a little more time for normal travel to resume world over. We can understand that. But, this is the period where the Government can plan for betterment of tourism sector in future.

Tourism is not only spiritual. There is cultural tourism. There is educational tourism where India's history dates back to more than 2,000 years. We have structures which project our pride. We have structures which show what Indians are. And still, we are excavating. In Keeladi in Tamil Nadu, the Archaeological Survey of India has excavated many things which are as old as 2,000 years and this will attract educational tourists to come to our country.

The problem is that in any tourist spot, the place becomes cramped because people, for their survival, want to set up shops and other things. It is quite natural. But cleanliness is very important. Environmental sustainability is very important. India ranks 34th out of 140 countries in overall report. Two major things have to be addressed. One is safety and security, in which India stands at 122nd position out of 140 countries. In environmental sustainability, India is at 128th position out of 140

countries. These are the concerns about which the Government has to do something. Otherwise, we will not be able to attract tourists.

Secondly, the most dangerous issue is attack on tourists. We have seen reports about thefts and cases of sexual abuse with women tourists. Even if one or two such incidents are reported, tourists will not feel safe and they will be afraid to come to India. Such incidents need not be more in number, even one or two incidents will prevent tourists from coming to our country. This is where the Government has to take care.

First, my suggestion is that the State Government should be involved in promoting tourism. The State Governments know more about these places. There are 22 languages and each language has a culture. Each language has a pride. Each language has a history of its own. There were many kings in this country who had built monuments. There were many kings in the country who had built educational institutions. The kind of culture, the kind of lives in every kingdom, has to be projected. It shows the buildings in the country. We have a temple in Thanjavur where a stone is kept on the temple and the shadow does not fall on the floor. It is a cultural thing. We have a stone in Mahabalipuram, a single stone. When we go near it, we will feel that it is going to roll, but it will stand. So, there are cultural tourism sites. People come to *See* Mahabalipuram very often. It is an attractive site. If you go to Kanyakumari, the sunrise is a great view. If you go to Rameswaram, we can *See* beautiful things. In Tuticorin, we have beautiful sea shore. In Chennai, Marina Beach is the second-largest beach in the world. We have a lot of things. So, I request the Government to involve the State Governments in the promotion of tourism. Sir, apart from this, we also have to involve the Ministry of External Affairs and all our Embassies the world over should have pamphlets on the tourism spots in our country. Only, then, people will come to know that there are so many tourist attractions in this country. Otherwise, people will not know about this. Our tourists go every year. Every year, there is huge movement of religious tourists from our country to various temples but how will we attract the overseas cultural tourists, how will we attract the overseas educational tourists? We have to project ourselves. This is the period where there is not much activity in tourism. The Government should utilize this period for promotion of tourism and it should develop methods to improve tourism.

Sir, due to this pandemic, around 5.5 crore people lost their jobs, which is a great loss. It was stated in this House by the Minister. The contribution of tourism was more than ten per cent to the GDP. Now, it has stopped. It will come back. It is not end of the day. But when we come back, we must come back with a force. The

entire world should know about India. There are many religions, many castes, many classes who ruled this country in the past 2,000 years. We had 3, 4 major kingdoms in Tamil Nadu. We had many kingdoms in North India. Every kingdom, every language has its own culture, its own cultural value and it is depicted in the buildings and structures built during that era. Everything should be preserved. Don't say that this is a new thing. Nothing is new. Even Babri Masjid is not new. It has a history of around thousand years. It is is there, people can come and *See* it. The point is, you don't attribute reason to demolish an ancient monument. This is very important. These monuments should be preserved. That way, we can attract tourists from all over the world. With these words, I conclude. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Thank you. The next speaker is Shri Ayodhya Rami Reddy.

प्रो. मनोज कुमार झा: सर, अयोध्या और राम, यहां दोनों साथ हैं।

उपसभाध्यक्ष (डा. एल. हनुमंतय्या): अयोध्या, राम और रेड्डी भी हैं ।

SHRI AYODHYA RAMI REDDY (Andhra Pradesh): Sir, first of all, I thank you for giving me this opportunity to participate in the discussion on the working of the Ministry of Tourism.

India is a land of great history and saw the arrival of various travellers, chasing utmost knowledge and wealth. Tourism has transformed into an industry, contributing about 6.5 trillion US dollars to world economy. India is the third largest destination in terms of investment and tourism globally. During 2019, travel and tourism contributed 6.8 per cent to the GDP and accounted for almost eight per cent of total employment in this country. However, it is unfortunate that the tourism sector has been one of the most severely impacted sectors of the economy in the wake of Covid pandemic. The industry will have bankruptcies, closure of business and mass unemployment. The priority for the Central and State Governments in these challenging times is to address the issues and challenges faced by this sector which saw people losing livelihood and employment; hotels shut and flights grounded for months together, and, still there is no surety as to when will the industry make a revival and return to original level of operations.Though many initiatives have been announced by the Government in terms of tax concessions and other measures, it is important to infuse liberalised loans and moratoriums on the existing loans to help the industry to come out of the present crisis. It is certain that without the intervention

from the Government, this industry will not be able to sustain. It is indeed the responsibility of the Government to handhold this important pillar of our economy through policy interventions at this point of time. In this respect, it is also important to *See* what other countries have done to revive the industry. We can learn from the best practices available across the world so that our tourism industry can revive at the earliest. As far as fiscal and monetary measures supporting tourism directly are concerned, these range from economic relief to tourism business, especially SMEs, such as exemption or postponement of taxes, loan repayment and tourism-related fees to the introduction of financial instruments such as special lines of credit, new loan schemes and investment programmes. Other tourism-specific measures include credit guarantees for tourism business and incentive programmes to support airlines. The Government has already taken a few measures in this regard, but more comprehensive and long-term measures are needed to support this stressed sector. Considering the high impact of the crisis as well as the fact that tourism is a labour-intensive sector, we should consider specific programmes to support tourism, namely, for re-starting the sector, adoption to new protocols and recovery. To address the issues, it is important to have coordinated efforts among relevant Ministries like Finance, Health, Labour, External Affairs, Transport, Tourism, etc. to ensure horizontal and vertical cooperation at all levels, including national, regional and local Governments. It is essential to pinpoint lessons learnt and elaborate a roadmap to respond to future shocks to build resilience in the sector. Like my friend said, this is the best time. This is the time when we can sit quietly and revisit our tourism strategy, not tourism alone, but for every business that we are in. It is the time to really re-think and re-write our strategies for the nation.

Coming to other challenges in the tourism sector, these are basically related to infrastructure and other related aspects of tourists like social security, etc. Once leveraged properly, tourism can be one of the best and most important sectors of this country, which can generate more employment and development for the country. The Government should only act as a facilitator and friendly guide, handholding public-private partnerships, which need to strengthen and support the Government initiatives.

Another area of major concern is of issues relating to hygiene and cleanliness. Though Swachh Bharat has created some awareness, it is important to continue with the drive on a continuous basis to keep the momentum. To create sustainable economic and friendly tourism in the country, it is important to create sound infrastructure and other facilities. Coordination and cooperation among States, Central Government and also local bodies is very important in this aspect. With

concerted effort of all stakeholders, we can definitely revive this important segment which is the livelihood of many. It is the responsibility of all of us to guide this industry to come out of this crisis. In fact, as of now, we are facing a twin challenge as far as this industry is concerned. The first part is regaining the lost ground due to pandemic and the other one is to create more and better facilities for future. To deal with these twin challenges, we need stronger policies and incentives, and I am hopeful that the Government will continue to be sympathetic to the issues and challenges faced by this industry in coming days.

Sir, I have a few things to suggest to the Ministry. Taking the time into consideration, make a clear master plan for our country in terms of what we need to do for tourism sector. Come out with clear deliverables, what the Government of India proudly wants to say that this is the contribution, or in each State, this one important project is centrally-sponsored, centrally-initiated, centrally-designed, conceptualised, implemented, operated and maintained. It need not be done directly by them. It can be done through public-private initiatives. Come out clearly to tell the States about it. States have to believe that these are the models which they can automatically emulate. We need to come out with those kinds of plans. Identify the right team at the level of Secretary and consultant. Identify all the stakeholders which are connected. Please come out with clear deliverables and tell about the teams that are going to conceptualise, plan, design, engineer, construct, operate and maintain it. It is a very important aspect. I want the Government of India to really show it because you have the clarity in the current leadership. That is what I think.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Mr. Reddy, you have completed your time.

SHRI AYODHYA RAMI REDDY: Sir, just one minute. Come out with the right models which the country can emulate. With reference to the State of Andhra Pradesh, under the dynamic leadership of Chief Minister Jaganmohan Reddy, the State is promoting PPP investments in the area of tourism.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Please finish it.

SHRI AYODHYA RAMI REDDY: Sir, just one minute. Hope Island of Kakinada is a model. We have lots of islands around our country. We just need to focus on that model. We have Gandikota in Kadapa. We have Rayalaseema heritage tourism. We have Araku ecotourism. We have Kolleru Lake tourism. We have the Tirupati

Temple town. We have a lot of temples in Andhra Pradesh. With a clear vision of the Chief Minister, we are moving in the right direction. We need the support from the Government of India to take this development forward and develop Andhra Pradesh as a tourist hub in the years to come. Thank you, Sir.

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश) : सर, चूँकि हम लोगों की पार्टीज़ को बहुत कम वक्त मिलता है, इसीलिए मैं पूरी फीचर फिल्म नहीं, बल्कि एक ट्रेलर पेश कर रही हूँ। अभी सब लोग बोल चुके हैं कि टूरिज़्म कितना important है, इसके लिए आँकड़े बता चुके हैं। मैं शुक्ल जी बधाई दूँगी, क्योंकि वे बहुत बढ़िया कहानीकार हैं, बहुत बढ़िया कहानी लिखते हैं। वे इस वक्त मौजूद नहीं हैं। यूनेस्को ने जो कहा तथा और तमाम जो बातें यहाँ कही गयीं, सर, हम यहाँ पर ज्यादातर religious tourism की बात कर रहे हैं, पुराने monuments की बात कर रहे हैं, ये तो हमारे पूर्वज बना कर गए हैं, हम लोग उसी का फायदा उठा रहे हैं। मैं यह जानना चाहती हूँ कि हमने कौन-सी नई चीज़ की है?...(**व्यवधान**)... अब अगर आप मास्क पहन कर comment करेंगे, तो मुझे सुनाई नहीं देगा। अगर आप यह चाहते हैं कि मैं आपकी बात सुनूँ, तो आप मास्क निकाल कर बोलिए।...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Madam, please address the Chair.

श्रीमती जया बच्चन : सर, अगर कोई बोल रहा है, तो उस पर ध्यान तो देना चाहिए।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Madam, that is okay, but you cannot speak like that.

SHRIMATI JAYA BACHCHAN: Sir, reaction is a very important thing as far as my original profession is concerned. An actor always reacts. Acting is not acting; it is reacting.

Sir, the future of tourism needs a lot of stimulus, a lot of support from the Government. I don't want to speak about the budget cut because everybody has spoken about it and the kind of loss that we have incurred during this pandemic. We have all kinds of tourism. We have wildlife tourism. We have medical tourism. We have pilgrimage tourism. We have ecotourism. We have cultural tourism. We have wellness tourism. I want to talk about cultural and entertainment tourism which is a very, very important part in today's time. सॉरी, सर, मैं जरा धीरे-धीरे बोलती हूँ।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): Madam, your time is four minutes. Please keep that in mind.

श्रीमती जया बच्चन : सर, ट्रेलर भी इतना छोटा नहीं होता है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. L. HANUMANTHAIAH): It is all right. But keep that in mind.

श्रीमती जया बच्चन : सर, एक वक्त ऐसा था, जब लोग बाहर से, विदेशों से आते थे। मैं domestic tourism के बारे में ज्यादा नहीं बोल रही हूँ, हिन्दुस्तानियों को tourism का बहुत शौक होता है। अगर आप देखें, तो domestic tourism भी बहुत अच्छा होता है। इस वक्त शायद कम हो गया होगा। सर, मैं international tourism की बात करती हूँ। लोग कश्मीर को देखने के लिए विदेश से आते थे। Unfortunately, यह वक्त ऐसा है कि विदेशी tourists नहीं आते हैं, अभी धीरे-धीरे domestic tourists ने आना शुरू किया है। इस बात को हमें ठीक करना होगा, इस इमेज को ठीक करना होगा। जो यह इमेज है कि वहाँ हमारी जान को खतरा है, वहाँ सिक्योरिटी नहीं है, इसे हमें बहुत ही aggressively ठीक करना होगा। I am not making any negative comment. I am just saying that it is very important to improve the image of the country which, at the moment, is very, very poor. I am sorry for saying this but that is the truth.

सर, दूसरे देशों में इतनी natural heritage sites नहीं हैं, जितनी हिन्दुस्तान में हैं। हमें इस पर बहुत गर्व है, मगर इन sites की maintenance क्या हैं, उनकी facilities क्या हैं? आप domestic tourists को बुलाएंगे, वे बेचारे मंदिर चले जाएंगे।

[**उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा)** *पीठासीन हुए*]

हमारे यहाँ इतने सारे अच्छे-अच्छे मंदिर हैं, इतने religious places हैं, मगर आप international tourist को attract करेंगे, तो उन्हें facilities चाहिए, cleanliness चाहिए, जिन चीज़ों पर ध्यान देने की बहुत ज्यादा जरूरत है - हमें इन पर बहुत ध्यान देना चाहिए। बाहर से बहुत से tourists इसलिए नहीं आते हैं, क्योंकि ये facilities हमारी sites में available नहीं हैं। सर, मैं cultural tourism की बात इसलिए कर रही हूँ...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Please conclude.

SHRIMATI JAYA BACHCHAN: Is the time over?

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Yes, it is over. You can take one more minute.

श्रीमती जया बच्चन : सर, मैं एक मिनट में नहीं बोल सकूँगी। This is the reason I did not speak in the last Session, and in this Session again, I refuse to speak for one minute. Whatever I want to speak and the way I want to speak cannot be done in one minute.

I absolutely protest and I will not speak. This is not correct. This is absolutely not correct and it is not fair.

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह : वाइस चेयरमैन महोदय, हम पर्यटन पर चर्चा कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)... पर्यटन विभाग पर चर्चा कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती जया बच्चन : सर, जो अच्छी-अच्छी बातें कर रहे हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह : और पर्यटन का हमारे देश में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): The timing is fixed in the BAC. ...(*Interruptions*)... You are aware of it....(*Interruptions*)...

SHRI SUSHIL KUMAR MODI: Sir, I have a point of order. ...(*Interruptions*)... उपसभाध्यक्ष महोदय, जया जी ने जो कहा that it is not fair. यह एक प्रकार का चेयर पर आरोप है। आपके जितने एमपीज़ होंगे, जितना समय होगा, आप उतना ही बोलेंगे। चेयर पर इस प्रकार का आरोप लगाना is not fair. ...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Member, I have heard you. ...(*Interruptions*)... Shri R.C.P. Singh, please continue. ...(*Interruptions*)...

श्रीमती जया बच्चन : सर, मैंने आज तक चेयर को कुछ नहीं कहा है। ...(**व्यवधान**)... मैं चेयर को बहुत सम्मान देती हूँ। ...(**व्यवधान**)...

PROF. MANOJ KUMAR JHA: Sir, one minute. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Is it a point of order? ...(*Interruptions*)...

श्रीमती जया बच्चन : मैं आपकी बात नहीं कर रही हूँ। ...(**व्यवधान**)....

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Madam, I have heard you. Please take your seat. ...(*Interruptions*)...

PROF. MANOJ KUMAR JHA: Hon. Vice-Chairman, Sir, look at the strength of the House now and look at the past precedents. Many Members, who were allotted four

minutes, have spoken for eight minutes. When you have no strength at all and there is no interest at all, please permit those who have the passion to speak. Sir, rules are made with flexibility. I have seen it in the past. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): You have made your point. I have heard you. Thank you. ...(*Interruptions*)... Shri R.C.P. Singh to continue. ...(*Interruptions*)... Hon. Members, I am sorry I cannot keep on allowing. ...(*Interruptions*)... Shri R.C.P. Singh, please proceed.

DR. AMEE YAJNIK: Sir, just a second. When anyone is speaking -- I respect their opinion -- somebody from any side should not comment on anything. That is not fair. ...(*Interruptions*)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): You made your point. ...(*Interruptions*)... Now, Shri R.C.P. Singh, please proceed. ...(*Interruptions*)...

श्रीमती जया बच्चन : सर, जब तक सदस्यों के विचार नहीं सुनेंगे, आप improve कैसे करेंगे? We are here to give constructive suggestions.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): I have heard you, Madam. Now, Shri R.C.P. Singh, please continue.

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह (बिहार) : वाइस चेयरमैन महोदय, आज हम लोग पर्यटन पर चर्चा कर रहे हैं। पर्यटन है क्या? मुख्य रूप से पर्यटन है- भ्रमण करना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना और वहाँ जाकर अपने देश को जानना और अगर कोई विदेश जाता है, तो विदेश को जानना, अपनी संस्कृति को जानना, जहाँ जाते हैं, वहाँ के खान-पान को जानना। पर्यटन में इन सारी चीज़ों से आप परिचित होते हैं। सर, हमारे देश का गौरवशाली इतिहास रहा है और हमारे देश में बहुत सारे पर्यटक स्थल हैं। मैं आदरणीय मंत्री जी एवं आदरणीय प्रधान मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ कि आज पर्यटन का जो इंडेक्स है, उसमें भारत 34वें नम्बर पर है। इसके लिए मैं इनको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

महोदय, मैं बिहार से आता हूँ और बिहार का जो इतिहास है, उसे आप सब जानते हैं कि वह ज्ञान की भूमि रहा है। चाहे वह नालन्दा विश्वविद्यालय हो, विक्रमशिला विश्वविद्यालय हो, ओदन्तपुरी विश्वविद्यालय हो, तेल्हाड़ा विश्वविद्यालय हो, वे सभी ज्ञान के केन्द्र रहे हैं, जहाँ लोग विदेशों से आते थे। इसके साथ-साथ वह सत्ता का भी केन्द्र रहा। आप जानते हैं कि मगध empire वहाँ हज़ारों वर्षों तक रहा, जिसका उस समय में बहुत बड़ा expansion भी था। इसलिए निश्चित रूप से हमारे यहाँ टूरिज्म की बहुत संभावना है। आप जानते हैं कि वह वैशाली गणतंत्र की भी भूमि रहा है। इसके अलावा, हमारे यहाँ प्राकृतिक रूप से गंगा नदी बहती है। अगर आप

भागलपुर और मुंगेर जाएँ, तो देखेंगे कि वहाँ गंगा में डॉल्फिन है, जिसकी हम सब चर्चा करते हैं। आप वहाँ जाइए, आपको वहाँ बहुत अच्छा लगेगा, बहुत सुंदर लगेगा। इस प्रकार, हमारे यहाँ सब तरह का टूरिज्म है।

अब मैं आपको गया लेकर चलूँगा। आप जानते हैं कि पूरे विश्व में जितने भी बुद्धिस्ट हैं, वे वहाँ आते हैं। वे वहाँ गोल्फ खेलने के लिए नहीं आते हैं, entertainment के लिए नहीं आते हैं, बल्कि भगवान बुद्ध को वहाँ ज्ञान प्राप्त हुआ था, इसलिए वे उस स्थान को वहाँ देखने आते हैं। वे जब वहाँ आते हैं, तो उनको शांति मिलती है। पूरे देश और दुनिया में हमारे हिन्दू धर्म को मानने वाले जितने लोग हैं, वे वहाँ अपने पूर्वजों के तर्पण के लिए आते हैं, उनके श्राद्ध के लिए आते हैं। आज वहाँ नीतीश बाबू के नेतृत्व में हमारी एनडीए की सरकार है। सुशील कुमार मोदी जी वहाँ के उप-मुख्य मंत्री रहे हैं। आप सुन लीजिए, वहाँ इतना बढ़िया निर्णय लिया गया है कि जब आप अपने पूर्वजों का तर्पण करने गया जाएँगे, तो देखेंगे कि हम लोग 2,800 करोड़ रुपये खर्च करके वहाँ गंगा का जल पहुँचा रहे हैं। आप जब वहाँ जाइएगा, तो देखिएगा कि वहाँ फल्गु नदी है, जहाँ पहले पानी नहीं होता था। अब वहाँ पर बहुत ही आकर्षक पुल बनाया जा रहा है, ताकि वहाँ जब लोग अपने पूर्वजों का तर्पण करने आएँ, तो उनको पानी मिल सके। वहाँ बहुत पानी है, आप चिन्ता मत कीजिए।

इसके अलावा, मैं आपको राजगीर लेकर चलता हूँ। राजगीर मगध का empire रहा है। मैं आपको बता दूँ कि अगर आप घूमिए-टहलिएगा, तो मन को शांति भी मिलेगी। आप राजगीर के पहाड़ पर चढ़िए -- यहाँ जितने लोगों को बटरफ्लाई में इंटरेस्ट है, जयराम रमेश जी को जरूर होगा -- हमारा जो पश्चिम का पहाड़ है, आप वहाँ जाइए, वहाँ एक-एक कॉलोनी में आपको बटरफ्लाइज़ की 30-30 तरह की नई-नई varieties देखने को मिलेंगी।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Please conclude. You have one minute to speak.

श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह : मैं आपसे अनुरोध करूँगा कि राजगीर चूंकि मगध का empire रहा है, तो दुनिया में cyclopean wall अगर कहीं है, तो वह सिर्फ ग्रीस और राजगीर में है। हम लोग चाहते हैं कि इस cyclopean wall को UNESCO World Heritage की सूची में डाले। इसलिए मैं माननीय मंत्री जी से यह अनुरोध करूँगा कि उसको World Heritage में लाएँ।

इसके अलावा, हमारे यहाँ रामायण का सर्किट है, हमारे यहाँ बुद्धिस्ट सर्किट है, जैन सर्किट है और कांवरिया पथ है। इनके लिए 'स्वदेश भ्रमण' की योजना है, जिसके लिए मैं मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ। हमारी बिहार सरकार ने जो भेजा है, अगर आप उसको स्वीकृति देंगे, तो निश्चित रूप से बिहार में टूरिज्म की संभावना बढ़ेगी, जिससे बिहार में भी तरक्की होगी और देश की भी तरक्की होगी। इसके बाद, जितने भी बाहर के टूरिस्ट्स हैं, जब वे वहाँ आएँगे, तो उनको अच्छा लगेगा, बहुत-बहुत धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Next is hon. Member, Shrimati Jharna Das Baidya. You have four minutes to speak.

SHRIMATI JHARNA DAS BAIDYA (Tripura): Sir, the hospitality and tourism sector was severely impacted by the pandemic causing a sharp decline in business and employment. However, months after lockdown, hiring in the tourism sector slowed down by 51 per cent in December compared to the last year, as per the data shared by job site *Indeed*.

As per the report, the hiring in the sector witnessed a sharp decline of 41 per cent between 2019 and 2020. And the search for jobs was down by 31 per cent. Though job postings and searches have seen a dip from pandemic-induced restrictions on mobility, while fear of the virus kept consumers away from traditional vacation spots, there is hope in a new year and a new season of travel.

Domestic tourism is the need of the hour for which we need a uniform protocol for the region. All other States in mainstream India are opening up now for tourists. If we don't act quickly, we will lose out to other States.

One of the things which I would like to point out is that having borders with five countries, the North-east has a huge potential for various kinds of tourisms.

NEC should take a lead to promote high-end tourism in the North-east. I also think that the region needs to put more stress on eco-tourism and community-based tourism.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Now, Shri A.D. Singh. You have four minutes.

SHRI A.D. SINGH (Bihar): Sir, in the year 2019, China received about 150 million tourists, France received about 200 million tourists and the numbers that we have is laughable and it is a so meagre. What is the reason? The reason is that we have not been able to sell our tourism properly abroad and we have so much of lack of infrastructure. There are three kinds of tourists. First is high-end tourist, who needs a very good hotel. Then there is middle-level tourist, who needs a hotel which is not very expensive, but not very cheap also. And there is another level who only wants very cheap hotel. There is lack of local transports. We don't have luxury buses and things like what we have abroad. On the other side, many of our colleagues have said as to how many jobs and wealth has been created by the tourism sector. What is happening in the last few years? Rs.2,000 crores or Rs.2,500 crores is being allocated to this Ministry which is so meagre, while on the other side we are acknowledging that so much wealth has been created and so much foreign exchange has come. Tourism is one area where we can generate lakhs of jobs, which is not happening. We have to increase the Budget of tourism sector at least ten times of

what we have today. In case we want to earn foreign exchange, we have to create infrastructure and generate millions of jobs. There requires a balancing between historian, folkteller, tourists, experts and policy makers to make a holistic tourist policy. For instance, there is an ample potentiality of village tourism. Indian villages can attract domestic as well as foreign tourists, but nothing has been done in this regard. There are many traditional tribal villages, which exhibit great folk traditions and way of life. People want to visit, but they have not been popularised. North-East is a beautiful place, particularly, Arunachal Pradesh. We should encourage more and more tourists to visit Arunachal Pradesh which will also send a message to the Chinese that this is our land and not to put any false claim that this is part of Tibet.

Now, coming back to my State of Bihar, there are rich Buddhist places in Bihar, in Bodh Gaya, Sarnath and Kushinagar. We can have a Buddhist tourist circuit in Bihar, which is still not there. My other colleagues from the other side said about Lichchhavis and other things. Where are the places to stay? There is no infrastructure. So, we have to create viable infrastructure.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Member, please start concluding.

SHRI A.D. SINGH: Gandhi*ji* started his struggle at Champaran, which can be popularized. Sita's birth place is there. Then, there are many other places. Rajgir is there. There are many Buddhist and Jainism spots which have not been adequately popularized. And, the only bad part is that there is no infrastructure in Bihar for anybody to visit and stay except in one or two places. This is what I wanted to say. Thank you so much.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Thank you. Now, Shri Narain Dass Gupta; you have seven minutes to speak.

SHRI NARAIN DASS GUPTA (National Capital Territory of Delhi): Thank you, Sir, for giving me this opportunity to speak on this important discussion on the Ministry of Tourism. सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि हमारे जिस साथी ने यहां discussion initiate किया था, उन्होंने कहा कि 'जंगल में मोर नाचा, किसने देखा' और बाद में कहा कि आदरणीय प्रधान मंत्री के बगीचे में नाचा, सबने देखा। मैं इसमें संशोधन करना चाहूंगा कि वहां अभी तक मोर नाचा नहीं है, वहां से अभी सिर्फ भोजन करके ही गया है, अभी नाचना बाकी है।

सर, शुक्ल जी ने धार्मिक स्थानों का वर्णन किया है। इन्होंने particular एक धर्म के बारे में बात की है, लेकिन हमारे यहां बहुत से ऐसे तीर्थ स्थल हैं, जो दूसरे धर्मों के भी हैं। अगर हम अजमेर शरीफ़ को देखें, तो यह एक बहुत बड़ा तीर्थ स्थल है। **.....(व्यवधान).....**

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Shukla*ji*, please. ...(*Interruptions*)... Gupta*ji*, you address the Chair.

श्री नारायण दास गुप्ता : मुझे बोलने दीजिए। **...(व्यवधान)...** सारनाथ, जो बनारस में है और जैसा कि अभी हमारे साथी ने गया के बारे में बताया है, तो इस प्रकार से अलग-अलग धर्मों के तीर्थ स्थल हैं। हमारे सिख धर्म का तीर्थ स्थल हेमकुंड साहिब है, गोल्डन टेम्पल है, तो इस प्रकार से काफी तीर्थ स्थल हैं। हमें यहां पर जिस प्रकार से बताया गया है, उससे ऐसा लगता है कि सरकार की सूची में कुछ ही तीर्थ स्थल हैं। मैं थोड़ा सा आंकड़ों में जाऊंगा कि जो Allocation of Budget है, वह बड़ा mismatch है। जब मैंने पिछले तीन-चार साल का अध्ययन किया, तो पता लगा कि हर साल जितना Budget allocate होता है, there is a difference between projection and performance. मैं माननीय मंत्री जी से यह जानना चाहूंगा कि हमें जितना Budget allocate होता है, वह सारा खर्च क्यों नहीं होता है? अभी यहां पर शुक्ल जी ने हमें बताया है कि हम 34वें नम्बर पर हैं। मेरा विश्वास है कि हम जो Budget allocate करते हैं, अगर उसको पूरी तरह से खर्च किया जाए, तो हमें नम्बर वन पर पहुंचने में देर नहीं लगेगी। इस प्रकार का mismatch नहीं होना चाहिए। सर, इसके साथ ही मैं यह भी बताना चाहूंगा कि इंडिया में medical tourism एक बहुत बड़ा scope है। हमारे देश में medical tourism पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है। हमारे यहां बहुत अच्छे-अच्छे डॉक्टर्स हैं। एक समय था जब हमारे देश के लोग दूसरे देशों में उपचार के लिए जाते थे, लेकिन अब इसका उल्टा हो गया है। जो हमारे पड़ोसी देश हैं, वहां से ज्यादातर लोग उपचार कराने के लिए हमारे यहां आते हैं, इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि हमारे यहां medical tourism में काफी स्कोप है। जैसे after sale service होती है, इसी प्रकार उपचार के बाद पेशेंट को यहां पर surgery के लिए रुकना पड़ता है। उन लोगों को यहां वीज़ा की प्रॉब्लम भी आती है। अभी यहां पर उनके रुकने की proper व्यवस्था भी नहीं है, उनके यहां ठहने की व्यवस्था होनी चाहिए। इस तरह से हमारे यहां medical tourism का बहुत बड़ा स्कोप है। मैं economics का student रहा हूं, हमेशा एक क्वेचन आता था, India is a rich country inhabited by poor. Why is it rich? It is rich in the sense of natural resources. As our friends have said, there are a number beaches also, we have a number of stations also; we also have natural resources in terms of large number of rivers. But, जहां पर tourism का development है, अभी उस पर पूरी तरह से ध्यान नहीं गया है। हमारे यहां number of hills हैं। आपने देखा होगा कि हमारे यहां से लोग tourism के लिए Switzerland जाते हैं, क्योंकि वहां पर बर्फ के पहाड़ हैं। हमारे यहां जितने बर्फ के पहाड़ हैं, मेरे ख्याल से विश्व में कहीं भी इतने बर्फ के पहाड़ देखने को नहीं मिलते। हम कहीं न कहीं इसको भी ignore करके चल रहे हैं। जो हमारे natural resources हैं, उनको exploit करना चाहिए, उस पर tourism बढ़ाना

चाहिए। जो हमारा projection है, उसका mismatch नहीं होता है, इसलिए tourism को बढ़ाया जा सकता है।

मैंने आपको natural resources के बारे में बताया। हमारे यहां वीज़ा की बहुत बड़ी प्रॉब्लम है। हमारे यहां जो टूरिस्ट्स आते हैं, अभी कोविड की बात छोड़ दीजिए, otherwise connectivity की बहुत बड़ी प्रॉब्लम है। हिंदुस्तान में English language उपलब्ध है, तो मेडिकल टूरिज़्म में काफी संख्या में लोग यहां आ सकते हैं। यहां पर skill development की कमी है। यहां पर लोग properly trained नहीं हैं। यहां बाहर से जो टूरिस्ट्स आते हैं, उनके लिए गाइड की सुविधा उपलब्ध नहीं है। इसके लिए भी हमें training centre खोलने चाहिए और इस प्रकार से गाइड्स को ट्रेनिंग देकर उनको शिक्षित करना चाहिए। मैं मंत्री जी का ध्यान मेडिकल टूरिज़्म और तीर्थ स्थानों की ओर आकर्षित करूंगा। आज हमारे हिंदुस्तानी लोग लाखों की संख्या में बाहर रहते हैं। वे चाहते हैं कि हम हर साल में एक बार तीर्थ यात्रा के लिए ग्रुप्स में आएं और अलग-अलग धर्मों के लोग, अलग-अलग स्थानों पर जाएं। इसी प्रकार से मेडिकल के संबंध में है। मंत्री जी को मेरा सुझाव है कि हम विदेशों में, अपनी embassies में इस प्रकार के डेस्क खोलें, वहां पर सुविधा प्रदान करें, जिससे मेडिकल ट्रीटमेंट वालों को मेडिकल की सुविधा मिले, तीर्थ यात्रियों को तीर्थ यात्रा की सुविधा मिले। यहां पर लोग ग्रुप्स में आते हैं। यहां हर साल अमरनाथ की यात्रा होती है। अभी तो कोविड के कारण अमरनाथ यात्रा बंद है, लेकिन ऑस्ट्रेलिया से दो-तीन सौ आदमी ग्रुप्स में आ रहे हैं। अगर हम बाहर के देशों में जाकर इस प्रकार की publicity करें और वहां हेल्प डेस्क बनाएं, तो टूरिज़्म के संबंध में जो सरकार की मंशा है कि हम नंबर एक पर आएं, वह हो सकता है।

महोदय, मैं आपके माध्यम से तीर्थ यात्रा के बारे में दिल्ली के विषय में एक बात शेयर करना चाहूंगा। हमारे मुख्य मंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी पिछले दो साल से senior citizens को तीर्थ यात्रा के लिए free of cost भेजते हैं, अभी कोविड की वजह से बहुत-सी ट्रेन्स नहीं गई हैं, लेकिन वे तीर्थ यात्रा किसी particular धर्म के लिए नहीं करवाते हैं।...(**व्यवधान**)...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Member, please start concluding.

श्री नारायण दास गुप्ता : अमृतसर में बहुत बड़ा वाल्मीकि मंदिर है। जहां वाल्मीकि जी रहते थे, वहां पर सीता जी का वास रहा और लव-कुश का जन्म हुआ। वह एक बहुत बड़ा temple है। वहां भी हमारे मुख्य मंत्री श्री अरविंद केजरीवाल जी ने तीर्थ यात्रा के लिए, उस particular समाज के senior citizens के लिए free of cost की व्यवस्था की। मेरा सुझाव यह है कि हरेक स्टेट्स में जो लोग इस प्रकार की सुविधा afford नहीं कर सकते, उनके लिए free of cost की व्यवस्था की जाए, जिससे tourism को बढ़ावा मिले, धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Thank you, Hon. Member. छाया वर्मा जी, आपके पास 12 मिनट का समय है।

श्रीमती छाया वर्मा (छत्तीसगढ़) : उपसभाध्यक्ष महोदय, अभी बहुत सारे वक्ताओं ने अपनी और अपने राज्यों की बात रखी है। मैं उन बातों को दोहराना नहीं चाहूंगी और मैं कुछ अपने राज्य की बात भी रखूंगी। "भारत आध्यात्मिक पर्यटन का देश है, आत्मा को शांति मिले, ऐसा परिवेश है।"

"अतिथि देवो भवः" अर्थात अतिथि देवता के स्वरूप होते हैं। भारत की परंपरा अपने अतिथियों का सम्मान करना रही है। सम्मान करने के लिए पर्यटन एक बहुत अच्छा अवसर है और एक बहुत अच्छी जगह है। पर्यटन सभी प्रकार के हैं, जैसे- धार्मिक पर्यटन है - आज कल राजनीतिक पर्यटन भी चल रहा है-सांस्कृतिक पर्यटन है, पर्यावरण है, पहाड़ हैं, नदियां हैं - ये सब पर्यटन में आते हैं। पर्यटन के बारे में बहुत सारे लोगों ने बताया है। भारत में पर्यटन सबसे बड़ा सेवा उद्योग है, लेकिन इसके सकल घरेलू उत्पाद में लगातार गिरावट आ रही है। पर्यटन के क्षेत्र में करीब नौ प्रतिशत के योगदान से लोगों को रोज़गार मिलता है। भारत में हर वर्ष विदेशों से 50 लाख विदेशी पर्यटक आते हैं और करीब 65 करोड़ घरेलू पर्यटक देश में भ्रमण करते हैं, जिससे राज्यों को बहुत अधिक राजस्व मिलता है। यह हम सबके लिए अच्छी बात है। अभी सम्माननीय शुक्ल जी बता रहे थे कि बजट में बढ़ोतरी हुई है। शुक्ल जी ने यह नहीं बताया कि पर्यटन के लिए 2,026 करोड़ रुपये का बजट मिला, लेकिन पर्यटन विभाग ने मांगा कितना था? पर्यटन विभाग ने जितना मांगा था, उसमें लगभग 1,152 करोड़ रुपये के करीब कम मिला। जितना मांगा था, जब इतना कम मिला, तो पर्यटन को बढ़ावा कैसे मिलेगा? स्वदेश दर्शन में 1,500 करोड़ रुपये मांगे थे, जिसमें 630 करोड़ रुपये मिले। महिला सुरक्षित टूरिज़्म में 2018, 2019, 2020 में महिलाओं के लिए एक पैसा नहीं मिला। पर्यटन में महिलाओं के लिए ज़ीरो परसेंट बजट रहा, तो कहां से बेटी सुरक्षित रहेगी? आप कहते हैं कि बेटी सुरक्षित रहे, लेकिन आपने पर्यटन के लिए बजट ही नहीं दिया, तो सुरक्षा का सवाल ही नहीं उठता। पिछले दिनों कोरोना महामारी के कारण जो विभाग सबसे ज्यादा चौपट हुआ, वह पर्यटन विभाग रहा। सारे होटल बंद हो गए, मोटेल बंद हो गए, टूरिज़्म के सारे स्पॉट्स बंद हो गए और लोगों का पूरा उद्योग-धंधा चौपट हो गया। लोग बेरोजगार हो गए, नौकरी से निकाले गए, पर्यटन विभाग कोरोना काल में पूरी तरह से चौपट हुआ। अब जब कोरोना का संक्रमण कम हो रहा है, तो थोड़ी बहुत कहीं-न-कहीं दस परसेंट की बढ़ोतरी हो रही है, दस परसेंट स्थान खुल रहे हैं, लोगों का आना-जाना शुरू हो रहा है। रेल जो आने-जाने के लिए एक बहुत अच्छा माध्यम है, सस्ता माध्यम है, लेकिन अभी अगर पर्यटन को बढ़ावा देने की बात कहें, तो उस जगह पर रेल की कीमत दोगुनी हो गई है। प्लेटफॉर्म की टिकट पचास रुपये हो गया है, तो ऐसे में पर्यटन को कहां बढ़ावा मिलेगा? मैं चाहती हूं कि पर्यटन के लिए आर्थिक मदद पहुंचाने की आवश्यकता है।

महोदय, जिस प्रकार सरदार सरोवर बांध के निकट नर्मदा जिले में देश के प्रथम गृह मंत्री लौहपुरुष सरदार पटेल जी की आदमकद मूर्ति की स्थापना हुई है और उसके चारों तरफ पर्यटन के लिए स्थान बनाया गया, यह बहुत अच्छी बात है और उससे उस राज्य को बहुत अच्छा राजस्व मिल रहा है। मैं सदन से आग्रह करती हूं कि इसी तरह महान पुरुषों की हर राज्य में बड़ी-बड़ी आदमकद प्रतिमाएं स्थापित हों, ताकि पर्यटन को बढ़ावा मिले। सभी राज्यों में, उनके जो-जो महापुरुष हैं, आप वहां उनकी प्रतिमाएं स्थापित करें, जिससे सभी राज्यों को उसका राजस्व मिले, यह मैं आपके माध्यम से सदन को कहना चाहती हूं।

माननीय महोदय, पर्यटन की कमाई को देखते हुए कुछ निजी कम्पनियां, कॉरपोरेट जगत विरासत स्थल को हथियाने में लग गया है। कुछ विरासत की जगहों का निजीकरण करने का काम चल रहा है - चाहे वह लाल किला हो, चाहे वह ताजमहल हो। आज अगर हम लाल किले का दीदार करने जाएंगे, तो बहुत अधिक पैसा खर्च करना पड़ता है। उसका टिकट इतना बढ़ गया है कि यह सोचना पड़ता है कि देखने जाएं या न जाएं। हम अपनी पुरानी धरोहर को सुरक्षित नहीं कर पा रहे हैं, संरक्षित नहीं कर पा रहे हैं, तो कहां से पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा?

महोदय, स्वदेश दर्शन योजना में पूर्वोत्तर भारत सर्किट, बौद्ध सर्किट, हिमालयन सर्किट जैसे योजनाबद्ध और प्राथमिकता के आधार पर 15 स्थानों को एक थीम सर्टिक बनाकर सरकार ने काम किया है। यह अच्छी बात है, लेकिन मैं चाहती हूं कि इसी तरह जिन-जिन राज्यों में देखने के स्थान हैं, उन सभी को एक सर्किट में लाएं और उसको विकसित करें, ताकि उस राज्य को भी पर्यटन में बढ़ावा मिले और उसे राजस्व मिले।

महोदय, सभी लोगों ने अपने राज्य की बात की है। मैं भी कुछ अपने राज्य की बात करना चाहूंगी। लोग छत्तीसगढ़ के बारे में सोचते हैं कि यह तो नक्सली क्षेत्र है, नक्सली राज्य है। लोग सोचते हैं कि यह तो आदिवासी राज्य है। मैं शुक्ल जी को बताना चाहूंगी कि आप अयोध्या में जय श्री राम के नारे लगा रहे थे और ऐसा कह रहे थे कि प्रभु श्री राम जी के मंदिर बनाएं। शुक्ल जी मैं आपको बताना चाहूंगी कि प्रभु श्री राम सबके कण-कण में विराजमान हैं और जब उनको चौदह वर्ष का वनवास हुआ, तो दस वर्ष वे छत्तीसगढ़ के जंगल में रहे। हमारी सरकार और हमारे मुख्य मंत्री श्री भूपेश बघेल जी का कहना है कि जिस राज्य में पर्यटन अच्छा होता है, वह राज्य राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाता है। ऐसा सोचकर हमारे मुख्य मंत्री ने उस राम वनगमन पथ के नौ जगहों को चिह्नांकित करके अपने बजट में 40 करोड़ रुपये सैंक्शन किए हैं और उसका काम शुरू हुआ है। मैं चाहती हूं कि इस योजना को 'स्वदेश दर्शन योजना' में लाकर सरकार उसको मदद दे। प्रभु श्री रामचन्द्र जी का अयोध्या में राजतिलक हुआ, वहां राम मंदिर बना रहे हैं, यह अच्छी बात है, लेकिन छत्तीसगढ़, जहां पर उन्होंने दस वर्ष व्यतीत किए, उस जगह पर भी ध्यान दीजिए और उसके लिए भी बजट ऐलोकेट कीजिए, यह मैं सदन से कहना चाहती हूं। छत्तीसगढ़ में कौशल्या माता का मंदिर है, जो प्रभु श्रीराम जी का ननिहाल है और वह जगह आठ तालाबों के बीच में घिरी हुई है, जहां पर माता कौशल्या प्रभु श्री रामचन्द्र जी को गोदी में लेती हैं। महोदय, वह प्रभु श्रीराम जी का ननिहाल स्थल है। हमारे मुख्य मंत्री जी उस स्थान के लिए सात करोड़ का बजट देकर, उसे पर्यटन के रूप में विकसित कर रहे हैं। पिछले 15 वर्षों से पिछली सरकार ने छत्तीसगढ़ में केवल होटल और मोटेल बनाने का काम किया, लेकिन पर्यटन पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सदन को बताना चाहूंगी कि हमारे मुख्य मंत्री भूपेश बघेल जी ने पिछले दिनों विश्व आदिवासी दिवस मनाया, जिसमें भारत के 23 राज्यों के लोग और विदेशों से आए हुए लोग शामिल हुए। विश्व आदिवासी दिवस में बेलारूस सहित विश्व के कई देशों के कलाकार और भारत के अनेक राज्यों के 1,800 कलाकारों ने भाग लिया और बहुत शानदार विश्व आदिवासी दिवस का कार्यक्रम हुआ, जिसकी सर्वत्र चर्चा और सराहना हुई।

उपसभाध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ में बहुत प्रसिद्ध स्थान हैं, जैसे बस्तर का चित्रकूट है, शिवरी नारायण है। चित्रकूट एक ऐसा स्थान है, जिसे मिनी नियाग्रा फॉल्स के रूप में जाना जाता

है। यह घोड़े के आकार का है और 100 फीट ऊंचाई से उसका पानी गिरता है, आपको वहां पर बहुत अद्भुत दृश्य देखने के लिए मिलेगा। वहां पर कुटुमसर की गुफा है। यह पूरी दुनिया में सबसे लम्बी गुफा है और इस गुफा की गहराई लगभग 100 मीटर है। वहां पर कई हिल स्टेशन्स हैं, जैसे चिरमिरी है, सिरपुर है, भोरमदेव है, पुरखौती मुक्तागंन है, तीरथगढ़ है, बारनवापारा है। आपकी पार्टी के सदस्य नेताम जी, जो उधर बैठते हैं, उनके क्षेत्र में एक गर्म पानी का उबलता हुआ जलप्रपात है, जिसमें 24 घंटे गर्म पानी निकलता रहता है। लोग उसमें अंडे और आलू डालकर पकाते हैं, खाते हैं। यह बहुत अच्छा दर्शनीय स्थल है, जो राम विचार नेताम जी के क्षेत्र में है। आप लोग दर्शन करने आइए, आप लोग छत्तीसगढ़ में आइए, आपको वहां पर सब चीज़ें देखने को मिलेंगी। ..(**व्यवधान**)... डोंगरगढ़ में पहाड़ हैं, वहां पर माँ बम्लेश्वरी का मंदिर है, जिसे 'प्रसाद योजना' में भी शामिल किया गया है। मैं चाहती हूं कि अन्य जो तीर्थस्थल हैं, उन्हें संरक्षण मिले और उनके लिए अलग से फंड मिले।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं सदन के माध्यम से कहना चाहूंगी कि पिछले दिनों कोरोना काल के दौरान पर्यटन पर एक भी पैसा खर्च नहीं हुआ, क्योंकि सारे पर्यटन स्थल बंद थे। मैं चाहती हूं कि पिछले वर्ष का और इस वर्ष का जो फंड है, उसे मिलाकर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अधिक से अधिक पैसा allocate किया जाए और पर्यटन विभाग को बेहतर से बेहतर बनाया जाए, जिससे कि लोगों को काम-धंधा मिले, लोगों को रोजगार मिले, धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Thank you. माननीय विनय दीनू तेंदुलकर जी, उपस्थित नहीं हैं। Shri Binoy Viswam, not present. माननीय श्री बृजलाल जी। आपके पास बोलने के लिए 10 मिनट का समय है।

श्री बृजलाल (उत्तर प्रदेश): आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे इस बजट सेशन में बोलने का मौका दिया है, क्योंकि मैं नया सदस्य हूं। इसके साथ ही साथ मैं अपनी पार्टी का, अपने मुख्य सचेतक श्री शिव प्रताप शुक्ल जी का आभारी हूं, जिन्होंने मुझे इस चर्चा में भाग लेने का मौका दिया। पर्यटन उद्योग एक सेवा का उद्योग है, हमारे कई वरिष्ठ साथी बोल चुके हैं कि पर्यटन उद्योग 13 परसेंट लोगों को रोजगार देता है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मुझे अपने सेवा काल में कई पर्यटक स्थलों पर पोस्टिंग का मौका मिला। मैं आगरा का एसएसपी रहा, वहां का डीआईजी रहा। जो भी हैड ऑफ स्टेट दिल्ली आता है, वह आगरा अवश्य आता है, इसलिए प्रोटोकॉल में रहते-रहते मैं भी टूरिस्ट गाइड बन गया था। आगरा में जो होटल्स की चेन है, आगरा के लोगों की जो जीविका है, वह पर्यटन पर निर्भर करती है। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि पर्यटन का कितना बड़ा महत्व हमारे जीडीपी में है। महोदय, विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद् ने यह forecast किया था कि 2018 में भारत पर्यटन के हिसाब से विश्व का सबसे ज्यादा आकर्षण वाला केंद्र बनेगा। वह अलग बात रही कि बीच में कोविड आया, उसको एक सेटबैक लगा, लेकिन जिस तरह से मौजूदा भारतीय जनता पार्टी की सरकार टूरिज्म इंडस्ट्री पर ध्यान दे रही है, इसका विकास कर रही है, उसे देखकर लगता है कि हम जल्दी ही यह achievement प्राप्त करेंगे। माननीय शुक्ल जी ने भी कहा कि हम जल्दी ही नंबर 1 पर आएंगे और मुझे लगता है कि वह दिन अब बहुत दूर नहीं है।

महोदय, मैं थोड़ा-सा उत्तर प्रदेश पर बोलना चाहूंगा, क्योंकि मैं वहाँ का रहने वाला हूं, मैंने वहाँ सेवा की है। यहाँ दो सर्किट्स मेन हैं। एक रामायण सर्किट है - अभी माननीय शुक्ल जी रामायण सर्किट पर बहुत विस्तार से बोल चुके हैं, मुझे उसमें कुछ बहुत ज्यादा ऐड नहीं करना है, मैं एक चीज़ बताना चाहूंगा कि वहाँ पर हमारे मुख्य मंत्री महंत योगी आदित्यनाथ जी के निर्देश से सरयू नदी के किनारे 251 मीटर ऊँची भगवान राम की भव्य मूर्ति बन रही है। यह विश्व की सबसे बड़ी मूर्ति होगी। चीन में भगवान बुद्ध का 208 मीटर ऊँचा मंदिर है, लेकिन अयोध्या में सरयू नदी के किनारे 251 मीटर ऊंची मूर्ति होगी। उसका पेडेस्टल आधार 50 मीटर ऊँचा है। आप इसको उसमें जोड़ लेंगे तो यह 301 मीटर बनता है। जिस तरह से अयोध्या का विकास हो रहा है, जिस तरह से नई अयोध्या बन रही है, वह केवल देश नहीं, बल्कि विदेश में भी आकर्षण का केंद्र होगा। सर, धार्मिक पर्यटन के साथ-साथ लोगों को एक ऐसा शहर भी देखने को मिलेगा, जो धर्म के हिसाब से, पर्यटन के हिसाब से और सभी के हिसाब से बहुत उच्च कोटि का होगा।

महोदय, शुक्ल जी ने अभी बनारस का उल्लेख किया है। मैं बनारस में भी तैनात रहा हूं। जब हम जाते थे, तो भगवान विश्वनाथ के दर्शन जरूर करते थे। तब हम पतली-पतली गलियों से निकलते थे, लेकिन मैं अभी थोड़े दिनों पहले जब वहाँ गया था, तो मैंने देखा कि वहाँ का स्वरूप बिल्कुल बदल गया है। तमाम जगहों पर जो कुछ मकानात थे, सरकार ने उनको मुँह मांगे दामों पर खरीदा और उस जगह को ऐसा स्वरूप दिया है कि वहाँ से गंगा जी सीधी दिखाई पड़ती हैं। बनारस, जो विश्व पर्यटन स्थलों में एक विश्व पर्यटक स्थल के रूप में उभर रहा है, वह भी बहुत भव्य होगा। अभी हमारे कुछ माननीय सदस्यों ने यह कहा कि हमने क्या किया, हम तो जो हमारे पुरखे बना गए, उसी का लाभ ले रहे हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि आज अयोध्या में क्या बन रहा है, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी की प्रतिमा किसने बनवाई है? यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने बनाई है। वह सरदार पटेल की प्रतिमा है और खासकर, हम जो पुलिस बैकग्राउंड के व्यक्ति हैं, हम सरदार पटेल जी का इतना सम्मान करते हैं कि हमारी अकादमी, जो हैदराबाद में है, उसका नाम ही सरदार वल्लभभाई पटेल नेशनल पुलिस अकादमी है।

श्री जयराम रमेश : यह किसने रखा था?

श्री बृजलाल : सर, आपने रखा था। बड़ी अच्छी बात है, जिसने भी रखा है, मैं इसका स्वागत करता हूं।

श्री जयराम रमेश : यह हमने किया था।

उपसभाध्यक्ष (डा. सस्मित पात्रा) : माननीय जयराम रमेश जी, प्लीज़ माननीय सदस्य को बोलने दीजिए।

श्री बृजलाल : महोदय, जो स्टैच्यू ऑफ यूनिटी बनी है, वह वास्तव में दर्शनीय है।

महोदय, अब मैं बुद्धिस्ट सर्किट पर आता हूं। बुद्धिस्ट सर्किट भगवान बुद्ध से संबंधित है। भगवान बुद्ध जहाँ-जहाँ गए, जहाँ-जहाँ उनके चरण पड़े, वह सारा क्षेत्र बुद्धिस्ट सर्किट में आता है। चाहे बिहार का बोधगया हो - हमारे वरिष्ठ सदस्य इसके बारे में काफी बोल चुके हैं, चाहे राजगीर हो, चाहे वैशाली हो, चाहे उत्तर प्रदेश में सारनाथ हो, कुशीनगर हो, कपिलवस्तु हो, श्रावस्ती हो, मैं माननीय उड्डयन मंत्री जी का, माननीय नरेन्द्र मोदी जी का आभार व्यक्त करना चाहता हूं कि कुशीनगर, जो बुद्धिस्ट का इंटरनेशनल सैंटर है, वहाँ पर जरूर आते हैं। वहाँ पर उनका परिनिर्वाण हुआ था और अब वहाँ इंटरनेशनल स्तर का एक हवाई अड्डा भी बन गया है।

महोदय, बुद्धिस्ट स्थल रांची में भी है। एक ईंटखोई नाम की जगह है। ऐसा कहा जाता है जब वहाँ भगवान बुद्ध गए थे तो महाराजा शुद्धोधन ने उन्हें खोजने के लिए किसी को भेजा था। वे मिले, लेकिन गायब हो गए, इसलिए उसका नाम ईंटखोई रखा। इसका नेपाली भाषा में अर्थ होता है कि यहीं से खो गए।

सर, नॉर्थ-ईस्ट में भी ऐसे तमाम स्थल हैं। आप अरुणाचल प्रदेश जाइए, मैं अपने सेवाकाल में वहाँ पर भी गया हूं। वहाँ पर तमाम मठ, मोनेस्ट्रीज़ हैं, सिक्किम में हैं। ये जो तमाम बुद्ध स्थलियाँ हैं, वे सभी हमारे लिए बहुत इम्पॉर्टेंट हैं। उत्तर प्रदेश में मथुरा है। जब मैं डीआईजी, रेंज आगरा था, तो मथुरा मेरे अंडर था। आप जाकर वहां का म्यूज़ियम देखें, भगवान बुद्ध की मूर्तियों से वह म्यूज़ियम भरा पड़ा है। वहां पर जो भगवान बुद्ध की मूर्तियां हैं, उन्हें मथुरा शैली और गांधार शैली के नाम से जाना जाता है, गांधार, जिस क्षेत्र में बामियान बुद्ध की मूर्ति थी, जिसे तालिबानियों ने तोड़ दिया।

महोदय, उत्तर प्रदेश में बुद्धिस्ट सर्किट में कुशीनगर बहुत अच्छा बना हुआ है। बुद्ध धर्म को मानने वाले थाइलैंड, म्याँमार, श्रीलंका आदि जो देश हैं, उन्होंने भी मंदिर बनाए हैं। हमारे यहां श्रावस्ती भी बुद्धिस्ट सर्किट में है।

महोदय, अब मैं कपिलवस्तु के बारे में कुछ कहना चाहूंगा। मैंने इस बारे में एक प्रश्न किया था, लेकिन बोलने का मौका नहीं मिला इसलिए उसे हाइलाइट करना चाहता हूं। मैं सिद्धार्थ नगर जिले का निवासी भी हूं। वहां पर पिपराहवा एक जगह है। सन् 1972 में वहां टीलों की खुदाई हुई तो एक स्तूप निकाल आया, महाराजा शुद्धोदन का महल निकल आया। उस स्तूप में भगवान बुद्ध का अस्थि कलश मिला। वह अस्थि कलश वहां म्यूज़ियम में रखा हुआ है। चूंकि यह नया स्थान है, 1972 में बना था, इसलिए उसके विकास पर उतना ध्यान नहीं गया है। उत्तर प्रदेश सरकार ने 1988 में उसी पिपराहवा का नाम कपिलवस्तु रखा, जो कि विधान सभा क्षेत्र भी है। वर्ष 1988 में मूल ज़िला श्रावस्ती था, उसमें से निकालकर नया ज़िला सिद्धार्थ नगर बनाया गया।

मैं माननीय गडकरी जी का बहुत आभारी हूं। उन्होंने बस्ती से कपिलवस्तु तक बहुत बढ़िया फोर लेन सड़क बनवाई है। पहले जब हम बस्ती से सिद्धार्थ नगर जाते थे, तो वहां तक पहुंचने में काफी मुश्किल आती थी। मैं इसी महीने वहां गया था, वहां बहुत ही बढ़िया सड़क बनाई गई है। वहां पर नवगढ़ एक छोटा सा कस्बा है। वहां नदी पर एक ओवरब्रिज बनाया गया है, जो देखने लायक है। इसके अलावा रेल मंत्रालय ने बस्ती से कपिलवस्तु तक नई रेल लाइन बिछाने का विचार किया है। उसका सर्वे का काम हो चुका है और 'पिंक बुक' नम्बर 6 में वह अनुमोदित है। मैं रेल मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि कपिलवस्तु को, जो भगवान बुद्ध की जन्मस्थली प्लव हो चुकी है, उसे रेल लाइन से जोड़ने का काम किया जाए।

कपिलवस्तु कुशीनगर और श्रावस्ती के बीच में है। श्रावस्ती, श्रावस्ती जिले में है, गोंडा और बहराइच के बगल में है। पिपराहवा जो अब कपिलवस्तु हो गया है, वह बीच में है, जहां भगवान बुद्ध की जन्म स्थली है। उसके ठीक पार नेपाल है। वहां पर लुम्बिनी है और वहां भी पर्यटक आते हैं, लेकिन नेपाल में रहने की जगह नहीं है।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Please start concluding. You have one minute.

श्री बृजलाल: अगर हम कपिलवस्तु को विकसित करें, तो जो भी टूरिस्ट नेपाल, लुम्बिनी जाएगा, वह आकर कपिलवस्तु में रुकेगा। वहां पर 2001 में उस समय के माननीय मुख्य मंत्री जी गए थे, उसी समय बामियान बुद्ध की मूर्ति तोड़ी गई थी, उन्होंने वहां शिलान्यास किया था और कहा था कि हम 180 फीट ऊंची भगवान बुद्ध की प्रतिमा बनाएंगे। उसका शिलान्यास तो हो गया, लेकिन अभी उस पर काम नहीं हो पाया है। मैं पर्यटन राज्य मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि बुद्ध जन्मस्थली का विकास किया जाए, इस बारे में मैंने आपको पत्र भी लिखा है। इसके अलावा एयर कनेक्टिविटी दी जाए, वहां रोड बन गया है, उसे रेल से जोड़ा जाए। इसके अलावा वहां पर जितना भी इन्फ्रास्ट्रक्चर है, उसे विकसित किया जाए, जिससे भगवान बुद्ध की जन्मस्थली, जो प्रामाणिक हो चुकी है, उसका विकास हो सके। धन्यवाद, जय हिन्द।

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Member, Smt. Vandana Chavan. You have seven minutes.

SHRIMATI VANDANA CHAVAN (Maharashtra): Sir, I think, out of various Ministries that we have, the Ministry of Tourism must be one of the most delightful and exciting Ministries. I am sure, the other Ministers envy the Tourism Minister for that reason, because it involves different flavors of art, crafts, dance, festivals, food, culture, history, heritage, traditions, nature, adventure and also showcasing modernity. There is so much to speak on. But, in my limited time, I would like to restrict myself only to the stark reality that is happening at the moment in the tourism industry and it is the plight of travel agents and companies who are facing hell after the COVID times. Some of them in my region have approached and given me a long list of problems that they are saying. I think, these are very serious issues that they are facing which challenges not just their operations but their very existence.

Sir, according to the UN's World Tourism Organisation, the year 2020 has been the worst year on record in the history of tourism due to pandemic. And, therefore, India is no exception. Therefore, India is no exception. When the lockdown was declared, tours, obviously were cancelled; customers and clients started asking the travel agents for refunds. By then, some of the bookings had already been made;

travels by the airlines, trains, road transport were already booked; hotels, packages of tours had been booked. After that, some ugly situations have arisen because these customers or clients started asking for their refund, which was not possible. Some of the offices were ransacked; serious allegations were made; and, threat calls were made to these people and agents. But, unfortunately, they were helpless. There are a lot of litigations now in the consumer courts. This is adding fuel to the fire.

The Travel Agents Association has expressed pain and deep frustration over their plight; and, further much anguish that the Government has not said a word which will show that the Government is really considerate about their plight and ready to do something. And, this just does not come to be in sight for all of them. I would like to read here some of the requests from a registered organization, called, Enterprising Travel Agents Association, Mumbai, which I have received through their representation made to me on 6th August, 2020. These requests are very relevant for consideration by the Government. There is a list of demands. With your permission, I would like to read them out because, I think, they are the most relevant and the Ministry needs to give very, very serious consideration to them. Number one, they say that the tax collected at sources (TCS) will be implemented on 01st October, 2020 -- of course this is a letter of August, 2020 -- it should be deferred by three years and the amount be reduced from five per cent to two per cent. Number two, they say that the reduction in the credit card swipe machine charges, which is currently 1.75 per cent, to 1.5 per cent, as it would encourage clients to use digital mode of payment. So, this charge also needs to be reduced. Their third demand is that they should get a GST holiday for a period of 12 months. Their fourth demand is that the international online travel agencies, like, booking.com, hotels.com, etc., be made to register in India and thereby making them liable to pay taxes. This will create a level-playing ground for online and offline travel agencies. The fifth demand that they wish to make is a bailout package of funds be provided and salaries, rents, and electricity be supported to agents registered under MSME and GST. The sixth point they make is, interest-free term loan to travel agencies for a period of three years, without collaterals. Their seventh request is that refunds -- in the case of LCC airlines, like, Indigo, SpiceJet, GoAir, etc., and the GDS airlines, like, Air India, Vistara, etc. -- should be made into the bank accounts of issuing agencies, instead of credit vouchers and credit share. These are the requests that they have made in their representation to me.

Now, they wish to further say that the required RTPCR tests should be standardized for travel to all the States. As of now, there is one set of rules in one

State and another set of rules in another State. That keeps changing. So, there has to be some kind of portal where all States are given equal treatment. Secondly, it should be easily accessible to the travel agents and the people who are travelling.

Another point which they wish to make is about the need for coordination between States and the Centre for development of tourism, post-COVID.

The last thing they wish to say is that an official status of industry be conferred to the tourism sector because they are otherwise not taken seriously.

Sir, if nothing is done in this direction, the tourism industry in our country will face large-scale bankruptcies, business closures, job losses, and will never be able to revive and recover. This, I wish to say and tell the hon. Minister, is absolutely serious. I think, steps should be taken in that direction with right earnest. These were the points of the travel agents.

I am voicing my second point, which is also very important, on behalf of the Central Government employees. The World Economic Forum has come up with a road map, post Covid, as to how they would move forward to revive the tourism sector. I don't *See* it happening in our country. I don't *See* any steps being taken. I may be wrong if it is happening. I think it needs to come into the public domain, so that a sense of credibility or a sense of assurance is lent to the travel agents and the people who wish to travel. So, that kind of statement needs to come out. The World Economic Forum or several agencies which are coming out with a roadmap say, at least, encourage travel which is within your country, and, here, I would like to bring to your notice, Sir, an issue of the Central Government employees. I was also surprised to note that the Central Government employees get a home town Leave Travel Allowance once in two years and an all-India Leave Travel Allowance once in four years. So, if an employee is staying in Delhi, he does not get a home travel allowance. But, if say he is staying in Pune, then, he gets a home travel allowance. I think the Government needs to encourage people to travel because this is what will revive the economy. Therefore, my suggestion to the hon. Minister, through you, Sir, is please reconsider, revisit these norms and let us bring 'every year, anywhere' for the Central Government employees. I think that will help the economy and also the Central Government employees to travel, whenever they want to visit their children or for medical help, etc.

The railway employees are given passes when they are in service, after retirement, and after death also to their families. So, this should be extended to the Central Government employees also.

My only last point is that there is a dire need of a tourism policy, not just for the Centre but also for the State and every city, because that is where the economy really

will revive at these places. So, thank you very much for giving me the opportunity to speak. I am sure the hon. Minister will consider all these demands that I have made.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Thank you. Now, Shrimati Priyanka Chaturvedi. You have seven minutes.

SHRIMATI PRIYANKA CHATURVEDI (Maharashtra): Wow, that is a bonus! Mr. Vice-Chairman, Sir, I thank you for giving me the opportunity. सर, मिनिस्ट्री ने 3,178 करोड़ रुपये की डिमांड की थी, लेकिन पिछले साल मिनिस्ट्री को 2,499 करोड़ रुपये मिले थे। इस साल, जब कोविड के कहर की वजह से 92,000 करोड़ रुपये का revenue loss हुआ है, तो हमारे यूनियन बजट में इसमें भी कटौती कर दी गई है। इस बार Ministry of Tourism को सिर्फ 2,027 करोड़ रुपया एलोकेट किया गया है, जो पूरे budgeted outlay का 0.06 per cent है। मैं मानती हूं कि यह सरकार की कथनी और करनी का अन्तर दिखाता है।

जब हम टूरिज़्म की बात करते हैं, तो बार-बार यह कहा जाता है कि अगर हमें economic activities को बढ़ाना है, employment opportunities को बढ़ाना है, तो टूरिज़्म पर ध्यान देना होगा, लेकिन जब आवंटन की बात आती है, budget allocate करने की बात आती है, तब कहीं न कहीं इस मिनिस्ट्री को भुला दिया जाता है। दुर्भाग्य की बात यह भी है कि सिर्फ इसी मिनिस्ट्री के साथ ऐसा व्यवहार नहीं हो रहा है। स्टैंडिंग कमिटी की रिपोर्ट में तो यहां तक कहा गया है कि मिनिस्ट्री का जो पूरा काम-काज रहा है, वह fiscal indiscipline से भरा हुआ है, poor budgetary planning है और under- utilization of funds रहा है। ये चीज़ें स्टैंडिंग कमिटी की रिपोर्ट में दी हुई हैं, ये मेरे आंकड़े नहीं हैं। नीति आयोग ने खुद यह बताया है कि देश में जो international travellers आते हैं, उनको 3 per cent तक लाने की जरूरत है, लेकिन हम सिर्फ 1.23 per cent पर खड़े हुए हैं और उसमें भी अपनी पीठ थपथपा रहे हैं। इसको बढ़ाना भी बहुत महत्वपूर्ण है।

सर, अगर विश्व के मुकाबले हम इंडिया का रैंक देखते हैं, तो जो World Economic Forum के आंकड़े हैं, उसमें Annual Travel and Tourism Competitiveness Index में हमें 34वें स्थान पर दिखाया गया है। दुख की बात यह भी है कि बहुत सारे जो ऐसे देश हैं, जहां ज्यादा लोग ट्रैवल करते हैं, वे इंडिया को लेकर, यहां के law and order को लेकर और महिला सुरक्षा को लेकर time to time advisory निकालते रहते हैं। जब भारत को international tourism की दृष्टि से देखा जाता है, ऐसे में अगर महिलाओं को as an economic contributor नहीं देखा जाता और उनको जो सेफ्टी मिलनी चाहिए, उसको भी दरकिनार कर दिया जाता है... शायद यह भी हो सकता है कि महिलाएं जब जीन्स पहन कर आती होंगी तो वे यहां के संस्कार और संस्कृति खराब करेंगी, तो हम उनके बारे में ध्यान ही न दें। ...(**व्यवधान**).. हां, फटी जीन्स,... तो यह बहुत महत्वपूर्ण है।

इसके साथ ही मैंने कुछ समय पहले सितम्बर के महीने में फाइनेन्स मिनिस्ट्री को लिखा भी था कि जो नेशनल रेस्टोरेन्ट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया है, जो इवेन्ट और हॉस्पिटेलिटी इंडस्ट्री है, उस पर खास तौर पर गाज गिरी थी। पांच करोड़ लोग उसमें कार्यरत हैं, चाहे वह

इनफॉर्मल सेक्टर हो या फॉर्मल सेक्टर हो और करीब तीस लाख इम्प्लॉईज़ की नौकरियां गईं या उनकी जॉब्स में कटौती हुई।

However, I will look at it positively. I will look at this as a constructive debate and a constructive Opposition role that I will do as far as this discussion is concerned.

Tourism infrastructure and its development are important to develop the industry. However, that hasn't come through as the under-utilization of fund shows. On that note, I would want to discuss about my State of Maharashtra which has been ranked No. 1 despite and in spite of Covid for bringing in policy measures that improve tourism in our State.

I come from a State which has wildlife reserves; it has forests; it has mountains; it has adventurous sports; it has a coastline; it has all kinds of possibilities of improving tourism. So, we came up with a policy which is a 'beach shack policy'. The 'beach shack policy' will ensure that the coastline that we enjoy and we have will promote tourism and create more job employments.

Under the leadership of hon. Chief Minister, Shri Uddhav Balasaheb Thackeray, and our hon. Tourism Minister, Shri Aditya Thackeray, we happen to have become the first State in India to give tourism an 'industry status', and I would recommend our Tourism Minister to look at it as an industry and give it the recognition it truly deserves.

We also brought in 'agro-tourism' which is practised by many States. But it is the first where we have come up with the comprehensive policy to ensure that we give encouragement to agro-tourism.

'Caravan Policy' is another thing that we have introduced. However, Sir, for any more visionary plans to be implemented, there needs to be support coming from the Government of India.

So, on that note, I would request the hon. Minister to please expedite the ASI approvals to put up tourism amenities in and along the sites such as Raigad Fort, Sindhudurg Fort and Murud-Janjira Fort. There are pending proposals lying with the Ministry for the development of Elephanta Caves. So, that should be expedited.

Sir, when we were talking about the Buddhist Circuits, I would also want inclusion of Maharashtra in Buddhist Circuit by the Ministry. I would also request the hon. Minister to consider giving 'UNESCO World Heritage status tag' to the unique sea forts of Maharashtra.

Sir, we have also sought larger projects under Swadesh Darshan and PRASAD Schemes of Government of India. However, even as the Standing Committee Report shows, the frequent time overruns in projects under both Swadesh Darshan and PRASAD Schemes create a hurdle which needs to be addressed.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Hon. Member, please start concluding.

SHRIMATI PRIYANKA CHATURVEDI: Yes, Sir. All I would like to say, since I have spoken about Maharashtra, I do agree with Shuklaji, as far as India is concerned, मथुरा से लेकर मां कामाख्या तक, काशी से लेकर केदारनाथ तक, अमरनाथ से लेकर अयोध्या तक, अयोध्या से लेकर अजमेर तक, त्र्यंबकेश्वर से लेकर तिरुपति तक, सारनाथ से समस्तीपुर तक तथा गोल्डन टेम्पल से गोवा के चर्चेज़ तक, इस देश के कण-कण में हमारा इतिहास और संस्कृति बसी है, कोने-कोने में हमारे देश का नाम है, तो क्या इन सब मुद्दों को टूरिज़्म में महत्व नहीं देना चाहिए? अगर महाराष्ट्र स्टेट पूरे देश में नम्बर वन बन सकता है, तो क्या हमारा देश पूरी दुनिया में नम्बर वन नहीं बन सकता? यही कहते हुए मेरा बस एक ही सुझाव होगा कि स्टैंडिंग कमिटी की जो भी रिकमंडेशन्स हैं, उनको इम्प्लिमेन्ट किया जाए and give tourism the priority which the economic recovery of the country deserves. Thank you.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. SASMIT PATRA): Thank you. Hon. Member, Shri Hardwar Dubeyji; not present. Hon. Minister, your reply, please.

पर्यटन मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री प्रहलाद सिंह पटेल): माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। मैं अपनी बात बिना किसी पर आक्षेप लगाये, वर्तमान की परिस्थितियों में जो उपमाएँ हमारे मनीषी देते रहे हैं, उनसे शुरू करना चाहता हूँ।

हम जब गाँव में रहते थे, तब कथाएँ सभी सुनते थे, तब महाभारत की कथाएँ भी चलती थीं। एक कथा यह थी कि जब महाभारत का युद्ध शुरू हुआ, तब बमुश्किल अर्जुन तैयार हुए और बाद में जब युद्ध के लिए सेनाएँ आमने-सामने खड़ी हो गयीं, तो श्रीकृष्ण ने उन्हें रोका और अर्जुन से कहा कि वहाँ एक वृक्ष है, उसमें एक घोंसला है, तुम वहाँ जाकर उसको निकाल लाओ तथा उसको इतनी दूर पहुँचाना कि महाभारत के युद्ध में कितने ही घातक प्रहार हों, उनकी आँच उस घोसले में रखे हुए अंडों तक न पहुँचे। सब आश्चर्यचकित थे कि युद्ध के समय अचानक इतनी छोटी बात क्यों की जा रही है। इसमें तो लाखों लोग मरेंगे, महिलाएँ विधवा होंगी, बच्चे यतीम होंगे, तो अंडों की चिन्ता क्यों की गयी? जब श्रीकृष्ण से पूछा गया, जो उस नायक की तरह थे, जो ज्ञान दे रहे थे, तब उन्होंने सिर्फ एक ही बात कही कि हिंसा और अहिंसा के बीच में एक बहुत बारीक रेखा होती है, जो लोग युद्ध के लिए जिम्मेदार हों और युद्ध में खड़े हों, उनका मरना तय है, लेकिन जिनका युद्ध से वास्ता नहीं है, उनका नुकसान नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि एक नायक की और जो दिशा देने वाले लोग हैं, उनकी मनःस्थिति यही होनी चाहिए।

महोदय, जैसे हिंसा और अहिंसा के बीच एक मामूली फर्क है, वैसे ही आलोचना और सलाह के बीच भी एक मामूली फर्क है। परिस्थितियाँ सबको पता हैं, लेकिन जब हमारे मन में, हमारी नीयत में यह रहता है कि हमें किसी को नीचा दिखाना है, विफल दिखाना है, तब वह आलोचना हो जाती है, बात वही होती है, contents वही होते हैं, आंकड़े वही होते हैं। लेकिन यदि

हमें देखना है कि हमें किसी की मदद करनी है, तो वही आंकड़े होते हैं, वही बातें होती हैं, वही तथ्य होते हैं और वे सलाहें बन जाती हैं।

महोदय, मैं हमारे उन तमाम आदरणीय सांसदों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने इस चर्चा में भाग लिया, जिसकी शुरुआत रेड्डी जी ने की। इस चर्चा में आदरणीय शुक्ल जी, श्री चन्द्रशेखर जी, श्री बालासुब्रमण्यम जी - जिनकी बातों को मैं मानता हूँ कि हमारे अधिकारियों ने भी नोट किया है और मैंने भी नोट किया है - श्री सुजीत कुमार जी, श्री के.सी. रामामूर्ति जी, श्री टी.के.एस. एलंगोवन जी, श्री अयोध्या रामी रेड्डी जी, श्रीमती जया बच्चन जी, आदरणीय श्री राम चन्द्र प्रसाद सिंह जी, श्रीमती झरना दास जी, श्री ए.डी. सिंह जी, श्री नारायण दास गुप्ता जी, श्रीमती छाया वर्मा जी, श्री बृजलाल जी, श्रीमती वंदना चव्हाण जी और अन्त में श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी जी ने अपनी बातें कहीं। मैं बिना यह सोचे कि कुछ ने आलोचना की है और कुछ सलाहें दी हैं, सबका आभार व्यक्त करता हूँ।

मैं अपने आराध्य आध्यात्मिक गुरु, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, उनके एक उदाहरण से अपनी बात की शुरुआत करना चाहता हूँ। परमपूज्य श्री बाबाश्री ने एक बार मुझसे प्रश्न किया कि अगर अचानक तूफान आ जाए, सब कुछ बरबाद हो जाए और तुम अकेले हो, तुम्हें कोई रास्ता दिखाने वाला नहीं हो और एक चौराहा आ जाए, उस चौराहे से कहाँ जाना है, इसकी सलाह देने वाला कोई व्यक्ति नहीं हो और जो दिशा-सूचक है, वह भी टूट कर कहीं दूर पड़ा हो, तब तुम आगे का रास्ता कैसे तय करोगे? उपसभाध्यक्ष जी, जब कोरोना का काल आया तब यह पर्यटन का जो दिशा-सूचक था, वह टूट कर कहीं दूर पड़ा था, सारे लोग देख रहे थे कि हमें किस दिशा में जाना है। मैं अपने प्रधान मंत्री जी का इस बात के लिए धन्यवाद करूँगा, इस बात के लिए मैं उनका अभिनन्दन करूँगा कि जहाँ पर दिशा सूझ नहीं रही थी, वहाँ पर उन्होंने उस दिशा-सूचक को लाकर खड़ा कर दिया।

(**उपसभापति महोदय** *पीठासीन हुए*)

मेरे आराध्य प्रभु श्री बाबाश्री ने मुझसे कहा था कि जहाँ पर कोई व्यक्ति न हो, दिशाएँ आपका साथ न दें, उसके बाद भी वहाँ पर कोई चीज़ बची रहती है, जो आपको रास्ता दिखा सकती है और वह यह है कि जिस रास्ते से आप आये हैं, वह रास्ता आपको पता है कि वह किस दिशा से आया है। आप जाइए, साहस जुटाइए, उस दिशा-सूचक को उठाइए और उसका वह फलक, जिधर से आप आये हैं, अपनी तरफ कीजिए, तो अपने आप बाकी दिशाएँ, रास्ते आपको दिखने लगेंगे। मुझे लगता है कि हमारे देश के प्रधान मंत्री जी ने कोरोना के बीच में यही महान कार्य किया है, इसके लिए मैं उनको बधाई देना चाहता हूँ। तारीफ सिर्फ शब्दों में इसलिए नहीं होती है कि हमें कुछ तारीफ करनी है, इसलिए तारीफ कर दी, हमें परिस्थितियों को समझना पड़ेगा। हमें यह भी देखना होगा कि वास्तव में हमारी दिशा ठीक है या नहीं है - बहस तो इस पर होनी चाहिए। आज पूरी दुनिया प्रताड़ित है, लेकिन जो देश यह दावा कर रहे थे कि हमारी स्वास्थ्य सेवाएँ दुनिया में एक नंबर पर है, जो कह रहे थे कि हम दूसरे नंबर पर हैं, जिनका आर्थिक तंत्र इतना मज़बूत था, जिसके दम पर वे दुनिया को अपनी अंगुलियों पर नचाया करते थे, उन देशों की हालत क्या है? आज हम जरूरतमंद देश हैं।

महोदय, मैं स्वास्थ्य की चर्चा में शामिल नहीं हो रहा हूँ, लेकिन मुझे कहना पड़ेगा कि हम स्वास्थ्य की सुविधाओं के मामले में 78वें स्थान पर हैं, पर हम हिम्मत कैसे जुटा पाए कि हम 150 से ज्यादा देशों को दवाइयाँ दे सकें, अभी हम 67 देशों को वैक्सीन पहुँचा रहे हैं। हम दुनिया के सबसे बड़े वैक्सीनेशन कार्यक्रम की धरती हैं, लेकिन उसके बाद भी हम ये दोनों चीज़ें और देशों को दे पा रहे हैं। क्या यह पैसे का खेल है? क्या यह व्यापार है? मुझे अपने प्रधान मंत्री पर गर्व है, अपनी सरकार पर गर्व है और मैं पर्यटन की इन विषम परिस्थितियों में उनको सैल्यूट करना चाहता हूँ, जो मेरे स्टेकहोल्डर्स हैं - होटल वाले, tour and travelers, guides एवं उनसे जुड़े हुए लोग - इनको मैं सैल्यूट करता हूँ। इतने बड़े आर्थिक नुकसान के बाद भी वे देश के साथ खड़े हैं, सरकार के साथ खड़े हैं। उनके मन से आलोचना का स्वर नहीं आया। मैं वर्ष भर उनसे लगातार बात करता रहा हूँ। हमें यह तय करना पड़ेगा कि हमारे पास ताकत कहाँ से आई। भारतीय पर्यटन चाहे देश के बाहर जाए, बाहर से भीतर जाए, वह ज्ञान के लिए जाता था, ज्ञान के लिए आता था। ठीक है कि परिस्थितियाँ बदली हैं, हम भी बहुत सारे बदलाव देख रहे हैं। हमें उन बदलावों के साथ चलना होगा - इस बात को मैं स्वीकार करता हूँ, लेकिन यह ताकत कहाँ से आई है? दुनिया क्या देखना चाहती है?

महोदय, पर्यटन perception पर चलता है। अलग से मेरे बजट पर चर्चा हुई है। पर्यटन ऐसा मंत्रालय नहीं है, हम स्टेकहोल्डर्स के लोग हैं। पर्यटन भारत सरकार का अलग है, राज्य सरकार का अलग है, होटल का अलग होगा, ऐसा नहीं है, बल्कि मैं भी एक स्टेकहोल्डर हूँ। भारत सरकार का पर्यटन मंत्रालय एक स्टेकहोल्डर है। वह बॉस नहीं है, वह अगुवा नहीं है कि वह जो चाहे, वह फरमान जारी कर दे - ऐसा नहीं है। आखिर में हमारी बहन ने कहा, मैं क्षमा चाहूँगा, अच्छा होता कि आप यह बतातीं कि आज देश में जो परिवर्तन है, उसमें महानगर संकट में है, बड़े होटल्स के ग्रुप संकट में हैं। पहले हमारी नीति क्या थी? पहले यह नीति थी कि हम महानगरों में होटल के दम पर दुनिया के विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते थे। आज हमारे चारों महानगर इस संकट में हैं कि वहाँ कोई आने के लिए तैयार नहीं है। क्या यह सच्चाई नहीं है? क्या यह बदलाव नहीं है? महाराष्ट्र और केरल जैसे राज्य, जो पर्यटकों के लिए पसंदीदा जगह होते थे, आज लोग वहाँ जाने के लिए तैयार नहीं हैं या आप उनको घुसने देने के लिए तैयार नहीं हैं। क्या यह सच्चाई नहीं है? क्या यह बदलाव नहीं है? अगर आप यह कहतीं, तो ज्यादा अच्छा होता कि महाराष्ट्र में होटल के क्षेत्र में इतने बड़े नुकसान के बाद, बिजली का बिल, जल कर, संपत्ति कर - ये तीन बड़े संकट हैं। आज इंडस्ट्री क्यों बैठ रही है? आज इंडस्ट्री के सामने यही समस्या है कि उसके पास बिजली का बिल देने के लिए पैसा नहीं है जबकि उसका tariff decided है, जल कर देने की सामर्थ्य नहीं है, प्रॉपर्टी टैक्स देने की सामर्थ्य नहीं है। यह राज्य का विषय है, यह भारत सरकार का विषय नहीं है। इंडस्ट्री के कष्टों को लेकर हम एक-दूसरे पर टोपियाँ नहीं पहना सकते हैं। मुझे लगता है कि हम एक-दूसरे के ऊपर आरोप न लगाएँ।...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति : प्लीज़, बैठ कर टिप्पणी न करें।

श्री प्रहलाद सिंह पटेल : मैं क्षमा चाहता हूँ, मैं किसी पर आरोप नहीं लगा रहा हूँ, बल्कि मैं तथ्यात्मक बात कर रहा हूँ, मैं आलोचना नहीं कर रहा हूँ। यह कष्ट है, मैं इस कष्ट को स्वीकार

करता हूँ। मैं मंत्री हूँ, इसलिए मुझे लगता है कि हम सबको यह तय करना होगा कि वास्तव में दिशा क्या है। क्या दिशा गलत है? अगर हमें बात करनी है, तो इन बातों पर भी बात करनी होगी कि वास्तव में हम किस रास्ते पर, विकास को किस रास्ते की ओर ले जाना चाहते हैं।

महोदय, मैं आपके सामने दो आँकड़े रखता हूँ। यह एक आँकड़ा है कि देश के भीतर आने वाले विदेशी पर्यटकों की संख्या 1 करोड़, 80 लाख है और भारत से बाहर जाने वाले पर्यटकों की संख्या 2 करोड़, 20 लाख है। मुझे लगता है कि इस आँकड़े पर बहस किसी की नहीं हो सकती है। इसके लिए कौन जिम्मेदार है, मैं इस पर बात नहीं कर रहा हूँ, लेकिन क्या हमने कोशिश की कि 2 करोड़, 20 लाख लोग जो देश के बाहर जाते हैं, वे देश के भीतर रह सकें? अगर यह किसी ने किया, तब कोरोना नहीं था, तो देश के प्रधान मंत्री ने लाल किले की प्राचीर से कहा था, "देखो अपना देश"- तीन साल के भीतर 15 से 20 स्थानों पर जाइए, उसके बाद आप विदेश की यात्रा कीजिए।" महोदय, वह स्लोगन ही आज इस कोरोना के बीच हमारे लिए वरदान बन कर आया है। आप आँकड़े उठा कर देखिए। यह हमारा आँकड़ा नहीं है, हमारे जो काम करने के तरीके हैं, उनमें आँकड़ों की विश्वसनीयता पर अभी भी प्रश्नचिह्न है। एक मंत्री होने के नाते मैं सदन में खड़े होकर यह बात कह रहा हूँ और मुझे लगता है कि इसमें कोई दोषी नहीं है। हमें इन गलतियों को सुधारना होगा। मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। जब से मैं मंत्री बना हूँ, मैंने एक बार कोरोना से पहले और एक बार कोरोना के बीच में, दो बार राज्य के पर्यटन मंत्रियों के साथ चर्चा की है। हमने दो दिन में पूरे देश के राज्यों के मंत्रियों से बातचीत की है और बातचीत करने के बाद निष्कर्ष निकला। उससे पहले एक आंकड़ा और था। उपसभापति महोदय, लोग हमसे पूछते हैं कि सरकार ने क्यों नहीं किया? मैं आपको बताना चाहता हूँ कि हर समय जब भी स्टेकहोल्डर्स ने कोई बात कही, तब उन्हें वित्त मंत्रालय से मदद मिली है। मैं उन आंकड़ों में नहीं जाना चाहता हूँ, लेकिन बहुत से माननीय सदस्यों ने उन आंकड़ों का ज़िक्र किया है। लेकिन कई जगह वित्त मंत्रालय मदद नहीं दे सकता था, उसका एक सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि पर्यटन मंत्रालय के पास होटलों की जो सूची थी, वह कुल 1,400 होटलों की सूची थी। अब आप बताइए कि क्या इस सदन में बैठा कोई भी व्यक्ति मानेगा कि देश में 1,400 होटल होंगे? वे चाहे रजिस्टर्ड हों या बाकी हों। जब मुझे यह बात पता चली, तब मैंने स्टेकहोल्डर्स से यह कहा कि इस तरह से नहीं चलेगा। वित्त मंत्री जी ने भी यही बात कही कि इस बात का कोई आंकड़ा तो लेकर आइए कि जरूरतें किस क्षेत्र में हैं? क्या कोई सोच सकता है कि इस देश में होटल इंडस्ट्री जैसे organized sector में काम करने वाले unorganized sector में होंगे! मैंने देश में चार साल unorganized sectors के मजदूरों के बीच में काम किया है, इसलिए मुझे दोनों में फर्क समझ में आता है, लेकिन नहीं था। जब कोरोना के बीच में हमने कहा कि रजिस्ट्रेशन नहीं हो सकता है, हमें किसी अधिकारी का हस्तक्षेप नहीं कराना है। आज 39,000 से ज्यादा होटलों ने NIDHI portal पर रजिस्ट्रेशन करा लिया है। क्या यह पहले नहीं हो सकता था? उपसभापति जी, जब उन्होंने यह संख्या 16,000 पार की, तब हमने कहा कि चाहे हैल्थ मिनिस्ट्री की हो, चाहे होम मिनिस्ट्री की हो, चाहे टूरिज़्म मिनिस्ट्री की एसओपी हो, क्या हम उन्हें adopt नहीं कर सकते हैं? इसमें किसी अधिकारी की जरूरत नहीं है। आप ऑनलाइन declaration कीजिए कि हम एसओपी को मानते हैं। आज की तारीख में वह संख्या भी लगभग 9,994 है, 10,000 से छः कम है, लेकिन इसमें गैप है। कहाँ 10 हज़ार और कहाँ 40 हज़ार! महोदय, जब मैंने पर्यटन मंत्रियों से बात की, तब गोवा के पर्यटन मंत्री ने जो बात कही, वह हम

सबके लिए है। हम स्टैंडिंग कमिटी की रिपोर्ट की बात करें, हम नीति आयोग की बात करें, हम सदन में सारे लोग इसके जिम्मेदार हैं। उन्होंने बताया कि गोवा के domestic tourists का जो आंकड़ा था, वह 90 लाख था और जब NIDHI portal पर सबने रजिस्ट्रेशन किया, तब जो संख्या आई, वह 1 करोड़ 40 लाख थी। हम यूनेस्को के आंकड़े प्रस्तुत करते हैं, लेकिन हमारा कोई तंत्र क्यों नहीं है? हम कहते हैं कि होटल के कमरे कम हैं, शहर में ज्यादा हैं, बाकी जगह पर नहीं हैं, लेकिन मैं बहुत सारे बदलाव देखता हूँ और उन बदलावों के बारे में इसलिए बताना चाहता हूँ, ताकि हम सब यहाँ पर धैर्यपूर्वक आगे का रास्ता तय कर सकें।

एक बदलाव मैं देखता हूँ कि महानगर संकट में हैं। जो पहले कभी हमारी प्राथमिकता होते थे, आकर्षण के केंद्र होते थे, लेकिन आज वे रसातल पर जाकर खड़े हैं, जहाँ पर शुरुआत करना कठिन है। इसमें सबसे बड़ी तकलीफ और चुनौती होटल इंडस्ट्री के लिए है। इनमें से जो महानगर में हैं, उन्हें ज्यादा तकलीफ है, लेकिन अगर वे किसी दूसरे छोटे शहर में हैं, तो वे वहाँ saturation पर हैं। यह एक अलग बदलाव है।

मैं महाराष्ट्र और केरल जैसे राज्यों के बारे में कह चुका हूँ कि वे हमारे अच्छे राज्य थे, लेकिन आज वे संकट में हैं। आज युवाओं की रुचि भी बदली है, दुनिया में भारत के प्रति दृष्टिकोण भी बदला है। जब ये perception की बात करते हैं, तो मैं बड़ी विनम्रता के साथ दो उदाहरण देना चाहता हूँ। हम पर्यटक पुलिस या बाकी विषयों के बारे में लगातार कहते हैं। यह कानून व्यवस्था की बात है। मैं एक ऐसा मंत्री था, जिसने पहले दिन ही कहा था कि मैं सोशल मीडिया पर हूँ। अगर किसी भी राज्य में कानून व्यवस्था के कारण भी कोई गड़बड़ होगी या रेल में कोई गड़बड़ होगी, तो मैं उसे नैतिकता के रूप में स्वीकार करूँगा और यह करना पड़ेगा। आप इससे जितना बचेंगे, उतनी ही तकलीफ होगी। आंकड़े सही बताने में क्या तकलीफ है? इसलिए, मुझे लगता है कि perception बदला है। जो बात मैं शुरू में कह रहा था, इसके पीछे हमारी संस्कृति और आध्यात्मिकता की ताकत है। हमारे मनीषियों ने, मुनियों ने, संतों ने, जो भी हमारी परंपराएं हैं, सबने यह कहा है कि अगर आपके पास दो रोटी हैं और कोई भूखा सामने आ जाए, तो एक रोटी उसे दे देना और एक से अपना काम चला लेना - यह है हमारी ताकत। इसके कारण अगर आज जो perception गया है -- आपने योग की चर्चा नहीं की, लेकिन योग हमारे सामने बहुत बड़ा आकर्षण का केंद्र है। ये बदलते परिवेश हैं, आने वाले समय की चुनौतियाँ हैं, जिनकी जरूरतों को हमें पूरा करना होगा। दूसरी बात, जब आपने वैक्सीनेशन से पहले दवाइयाँ दीं, क्या इससे दुनिया में आपका मान नहीं बढ़ा? सर, perception सिर्फ हमारी गलतियों से नहीं बिगड़ता है, आप मुझे क्षमा कीजिएगा, जो भी ऐसा महसूस करता है, ज़रा हमें भी अपने घर पर बैठकर देखना चाहिए। परसेप्शन अगर हमारी गलती से बिगड़े, तो हम अपनी गलती को सुधार सकते हैं, लेकिन परसेप्शन अगर कोई हमसे ईर्ष्या से बिगाड़ने की कोशिश करे, तो उसके लिए हम सबको एकजुट होकर कोशिश करनी पड़ेगी और उसके लिए बड़ी सिम्पल-सी बातें हैं। शायद यह उदाहरण सबके सामने आता है, ऐसी कहानियाँ चलती हैं। ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक यात्री गया और पूरा हिमाचल घूमा और आखिर में उसके मुँह से निकला कि साहब, हमें तो यहाँ सेब देखने को नहीं मिले! जब वह ट्रेन के डिब्बे में बैठने लगा, तो एक लड़का उसके सामने एक टोकरी में फल लेकर आया और उसको यह कहकर दिया कि ये सेब हैं। उस यात्री ने उससे पूछा कि इसके कितने पैसे हुए? तब उस लड़के ने कहा, मुझे पैसे नहीं चाहिए, लेकिन यहाँ से लौटकर किसी से

यह मत कहना कि हिमाचल में सेब नहीं मिलते हैं। परसेप्शन की ऊँचाइयाँ हम इस आधार पर छू सकते हैं। मुझे लगता है कि जब हम पर्यटन मंत्रालय की बहस में शामिल होते हैं, तो हमें यह तय करना पड़ेगा कि हम सब स्टेकहोल्डर्स हैं। यहाँ लोगों ने जितनी चीज़ों के बारे में सुझाव दिए, उन चीज़ों को मैंने लिखा है। उनको लेकर ही सरकार भी आगे बढ़ेगी और हम उनके रास्ते खोजेंगे, लेकिन वही पर्यटक जो कल होटल में रहना पसंद करता था, आज वह 'Homestay' में रहना चाहता है, वह Wellness Tourism की तरफ आकर्षित हो रहा है। उसको लगता है कि नहीं, भारत सबसे प्रसिद्ध जगह है। मैं आंकड़े देने के लिए तैयार हूँ। शायद स्टैंडिंग कमिटी में भी यह बात सामने आई होगी कि इस देश में जिस समय कोरोना आया था, उस समय यहाँ जितने भी विदेशी पर्यटक थे, उन्होंने अपने देश जाना सुरक्षित नहीं समझा, बल्कि भारत में रहना सुरक्षित समझा। यह है सच्चाई कि भारत के प्रति लोगों का भरोसा क्या है। अब वह भरोसा आयुर्वेद के प्रति है, आयुष के प्रति है, हमारे होटल्स के अतिथि-सत्कार को लेकर है, यह मूल्यांकन का विषय हो सकता है और हमें इस बात का मूल्यांकन करना चाहिए कि उसका भरोसा किस बात पर था? अगर हमें प्रमोट करना है, तो हमें उसे करना चाहिए, लेकिन हम योग की बात कैसे भूल सकते हैं? हमारी इस दवाई और वैक्सीन की बात हम कैसे भूल सकते हैं? मैं मानता हूँ कि देश के बारे में दुनिया में जो सोचने का नज़रिया है, यह तो मानना पड़ेगा कि कोरोना के बाद इसमें जबर्दस्त बदलाव आया है। यह बदलाव भारतीय पर्यटन को निश्चित रूप से इस बात का साहस देता है, मेरे जैसे व्यक्ति के मन में विश्वास अर्जित करता है कि 2020 'शून्य वर्ष' होने के बावजूद, अभी भी मैं प्रधान मंत्री जी द्वारा घोषित उस आंकड़े को बदलने के लिए तैयार नहीं हूँ कि इस देश में विदेशी पर्यटकों की संख्या 2024 में दोगुनी होगी - वह निश्चित रूप से होगी। हम इन कष्टों को स्वीकार करते हैं, इन तकलीफों को स्वीकार करते हैं, लेकिन जब हम survival और revival की बात करते हैं, तो जब पर्यटक का आना शुरू होता है, तब survival शुरू हो जाता है, revival उसके बाद की घटना है। हम उन विभागों जैसे नहीं हैं, जो सोचते हैं कि जिस गति से हमारा नुकसान हुआ है, उसके कारण हम बाद में बहुत धीमी गति से चलेंगे और उसके बाद हमारा रास्ता निकलेगा। जी नहीं, ऐसा नहीं है।

कई लोगों ने जम्मू-कश्मीर के बारे में बात की है। मैंने राज्य सभा के एक प्रश्न का यहाँ जवाब दिया था। मैंने जनवरी, 2020 का आँकड़ा दिया था और जनवरी, 2021 का आँकड़ा दिया था, हालाँकि बाकी जगहों के आंकड़े इकट्ठे होते नहीं हैं, राज्य सरकारें भेजती नहीं हैं। जम्मू-कश्मीर के यू.टी. बनने के बाद मैं IISM, Gulmarg के एक कार्यक्रम में कारगिल गया था, क्योंकि हमने कारगिल में उसकी एक ब्रांच खोली थी। उपसभापति जी, जब मैं श्रीनगर से वापस आया, तो यह स्वाभाविक है कि पर्यटन मंत्री होने के नाते मैं स्टेकहोल्डर्स से पूछूँगा। मैंने वहाँ की अथॉरिटी के लोगों से पूछा। उन्होंने कहा, पिछले 16 वर्ष के अनुभव ऐसे हैं कि इससे ज्यादा टूरिस्ट्स 16 वर्षों में कभी नहीं आए। जब मैंने आंकड़े मँगवाए, तो पता चला कि जनवरी, 2020 में श्रीनगर में जो पर्यटक गए थे, उनकी संख्या लगभग 3,700 थी और इस बार जनवरी, 2021 में वह आंकड़ा 19,042 है। मुझे लगता है कि हमें आंकड़े सुधारने चाहिए।

हमारे एक मित्र यहाँ कह गए कि 200 मिलियन Chinese tourists होते हैं, जबकि वह 69 बिलियन है। मुझे लगता है कि ऐसे आंकड़े सभा के पटल पर नहीं रखने चाहिए। झा साहब बाजू में बैठे थे, वे मुस्कुरा रहे हैं, उनको पता है कि उन्होंने जो कहा, वह आंकड़ा गलत था। मुझे लगता है

कि यह आलोचना नहीं है। जब कभी हम तय करें कि हमें आंकड़े देने हैं, तो सदन के फ्लोर पर हमें सही आंकड़े प्रस्तुत करने चाहिए। आलोचना करना आपका अधिकार है, आप आलोचना करें, लेकिन मुझे लगता है कि जब सलाह मांगी जाएगी, तो वह सलाह देश के लिए होगी। पर्यटन मंत्रालय ऐसा मंत्रालय है, जहाँ पर देश की साख भी साथ में चलती है। अगर कहीं किसी पर्यटक के साथ अभद्र व्यवहार होगा, तो वह यह नहीं कहता कि आपके मध्य प्रदेश में हुआ, बल्कि वह कहता है कि भारत में मेरे साथ अन्याय हुआ है। इसमें प्रतिष्ठा सबकी जाती है। मुझे लगता है कि इसी भाव से हम सबको यहाँ पर देखना होगा। जो बदलाव हैं, वे नए लोगों में भी हैं। अवसर जरूर हमारे सामने हैं और उन अवसरों के बारे में बहुत सारे लोगों ने कहा है, जैसे- Wellness Tourism है, हमारा जो Adventure Tourism है, उसमें अवसर हैं। एक समय चीन हमारी प्राथमिकता होता था, हमारी टूरिज्म पॉलिसी का हिस्सा होता था कि हम चीन को आकर्षित करें, बुद्धिज्म के नाम पर वहाँ के लोग आएँगे, लेकिन अब बात बिल्कुल बदल गई है। अब चीन के लोगों को प्रवेश देने के लिए हमारा देश तैयार नहीं है। लेकिन चीन जाने वाले अन्य देशों के जो पर्यटक हैं, वे अब हमारी प्राथमिकता हैं, क्योंकि उनके मन में भारत के प्रति जो आकर्षण पैदा हुआ है, क्या हम उसको पूरा कर पाएंगे? मुझे लगता है कि हमे इन बदलावों पर चर्चा करनी होगी। यहां कूज़ टूरिज्म की बात की है, ईको टूरिज्म की बात की है, ये बदलाव हैं, जिन्हें मैं देखता हूं। इसलिए मैं विनम्रता के साथ कहूंगा कि आपके सुझाव अच्छे हैं। यह सरकार ऐसी नहीं है, जो पैसे के लिए कहे कि हमने बजट दे दिया है। जितने आपने खर्च किए थे, उतने तो हमने दे ही दिए, आप ही ने कहा कि खर्च नहीं किए। अगर आप खर्च न करने के पीछे का कारण जानेंगे तो आपको शायद थोड़ी तकलीफ़ होगी। ये जो 'स्वदेश दर्शन स्कीम' और 'प्रसाद स्कीम' है, ये राज्यों के पास हैं। आपने महाराष्ट्र का उदाहरण दिया, मैं आपको बताना चाहता हूं कि वर्ष 2015 से जितनी बार पैसा गया है, एक बार भी महाराष्ट्र में योजना पूरी नहीं हुई। ...(**व्यवधान**)... वहां किसी की भी सरकार हो, आप कह सकती हैं, वहां आज भी नहीं हुई। मुझे लगता है कि इस बहस में नहीं पड़ना चाहिए, योजना तो पूरी नहीं हुई। उपसभापति महोदय, भारत सरकार ने यह तय किया कि जैसे ही एक योजना पूरी होगी, हम दूसरे ही दिन आपको दूसरी योजना देंगे, आप पूरी कीजिए। उत्तर प्रदेश ने यही काम कर लिया, उन्हें पैसा मिलेगा। मैं यह कह सकता हूं कि देश के किसी भी राज्य का मंत्री या कोई सांसद कहे कि आपने हमारे साथ भेदभाव किया है, तो मैं उनसे क्षमा मांगने के लिए तैयार हूं। मुझे लगता है कि हम सबको मिल कर काम करना पड़ेगा। योजनाएं पूरी होंगी तो निश्चित रूप से पैसा मिलेगा। इसमें भारत सरकार कटौती नहीं करती है। जब ज़रूरत पड़ेगी तो हमें extra fund मिलेगा। हमने iconic sites की बात की है, आपमें से किसी ने कहा कि हम विश्व स्तर पर कुछ नहीं करना चाहते। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि हमने बहुत कुछ किया है। एएसआई के माध्यम से हमने 19 iconic sites की चिंता की है। हमने इन 19 iconic sites में यह भी तय किया है कि वहां पर वर्ल्ड क्लास सुविधाएं उपलब्ध कराएं। उपसभापति महोदय, एएसआई पर्यटन मंत्रालय का हिस्सा नहीं है, लेकिन जब पर्यटक आते हैं तो हमारे स्मारकों पर जाते हैं। यहां पर जया जी मौजूद नहीं हैं। पांच महीने पहले मेरी फिल्म इंडस्ट्री के लोगों से बातचीत हुई, तो उन्होंने कहा कि एक स्मारक पर फिल्म बनाने की परमिशन लेने में एक साल का समय लगता है। मैंने कहा कि 20 दिन में आपको ऑनलाइन परमिशन मिलेगी। मुझे यह बताते हुए गर्व महसूस हो रहा है कि उसका लाभ लेते हुए आज 26 फिल्मों की शूटिंग जम्मू-कश्मीर में चल रही है। दूसरी बात उन्होंने यह कही कि

एक लाख रुपये लगते हैं, हमने कहा कि 50 हज़ार रुपये लगेंगे, उसी समय 50 परसेंट कर दिया, क्योंकि इंडस्ट्री संकट में है, कहीं तो मूवमेंट शुरू होना चाहिए। आज़ादी का 75वां वर्ष है, आप iconic sites और world heritage sites को छोड़ कर किसी भी साइट पर जाएं, आप चाहे पत्रकार हों, फिल्म निर्माता हों या आप सामान्य नागरिक हों, आप वहां फोटोग्राफी कीजिए, वीडियोग्राफी कीजिए, आपको कोई नहीं रोकेगा। जिन monuments में light and sound कार्यक्रम हों, वे स्मारक 9 बजे तक खुलेंगे। अगर डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन तैयार है तो हम 10 बजे तक खोलने के लिए भी तैयार हैं। यह हो चुका है, लेकिन अगर हमें जानकारी नहीं है तो हमें जानकारी ठीक करनी चाहिए।

महोदय, एक बात आयी थी कि विदेशी पर्यटक आएंगे, तब हम चाइनीज़ पर फोकस कर रहे थे। हमने एक बात तय की थी कि हमारे जिस स्मारक पर एक लाख से ज्यादा विदेशी पर्यटक जाएंगे, अगर वे वहां हिन्दी और अंग्रेज़ी में comfortable नहीं हैं, तो हम उनकी भाषा के लिए चाइनीज़ लगाएंगे। सांची में हमने सिंहली में लगाया। श्रावस्ती, सारनाथ और नालन्दा में चाइनीज़ में लगाए। कोरियन की संख्या 90 हज़ार के करीब पहुंच गई है, तो हमने कहा कि हम कोरियन्स को लगाएंगे। हमें ये काम करने होंगे, हमें इस बदलाव को स्वीकार करना होगा। यहां वेबसाइट की बात हुई, मैं समझता हूं कि एक महीने बाद यह देश की सभी भाषाओं में होगी। प्रधान मंत्री जी ने कहा है कि यू.एन. की भाषा में हमारी वेबसाइट होनी चाहिए। आज भी 'Incredible India' आठ भाषाओं में है। हम इस मांग को स्वीकार करते हैं कि कम से कम local language की हमारी साइट्स पर उपलब्धता होनी चाहिए। जब हम मानते हैं कि हमारे national highways हैं, तो ऐसी स्थिति में क्या हम टूरिज्म हाईवे नहीं बना सकते? टूरिज्म हाईवे का concept इतना ही है कि जो मार्ग ज्यादा चलते है - अब कोई सरकारी-गैर सरकारी नहीं है - हम चाहते हैं कि हमारी साइट पर उस पूरे रूट पर जितने भी होटल्स हों, गेस्ट हाउस हों, बेहतर पब्लिक एमिनिटीज़ हों, उन सबका उल्लेख उस साइट पर हो। कौन कहां पर जाना चाहता है, वह स्वयं तय करे। आंकड़े इतने खराब नहीं हैं। आप किसी भी हिमालयन स्टेट की बात कीजिए। हम जनवरी, 2020 में जहां थे, उससे ऊपर हैं। आप गोवा की बात कीजिए, आपने एयरबबल की बात की है, सारी योजनाओं का लाभ मिलने के बावजूद भी मेरे जैसा आदमी संतुष्ट नहीं है। यह हम सबको स्वीकार करना पड़ेगा। अभी बहुत तेज़ी से चलने की ज़रूरत है। जब हम अपने domestic tourist को नहीं संभाल पा रहे हैं, तो कल के दिन जब विदेशी पर्यटक आएंगे, तब हम क्या करेंगे, यह चुनौती देश के सामने है। मैं इसे स्वीकार करता हूं। एक तरफ वह इंडस्ट्री है, वह महानगर है, वह प्रदेश है, जो कोरोना के कारण खड़े नहीं हो पा रहे हैं। उनका कष्ट अलग है, उनकी चुनौतियां अलग हैं, लेकिन जहां पर कोरोना नहीं है और domestic tourism के कारण saturation है, अगर वहां पर विदेशी पर्यटक आएगा, तो क्या हम सम्भाल पाएंगे? यह चुनौती अलग है, उसकी तैयारियां भी सरकार कर रही है। जब मैंने Wellness Tourism Board की अध्यक्षता की तो AIIMS के Directors से लेकर सभी लोग उसमें थे। सबने यह माना कि जितने हमारे Wellness Centres हैं, वहां कमरे नहीं हैं, वैसी सुविधाएं नहीं हैं। क्या होटल्स और उनके बीच में कोई coordination हो सकता है? आपको इस रास्ते पर जाना पड़ेगा। इस पर अनेक सुझाव हो सकते हैं और मैं चाहता हूं, सदन से यही प्रार्थना करता हूं कि हमें ऐसे सुझाव मिलने चाहिए, हमारी स्टैंडिंग कमेटियों की बैठकों में हमें रचनात्मक सुझाव देने चाहिए। हमें नीति आयोग निर्देश देता है या दिशा-निर्देश देता है, उनसे इतर भी हमें

नए सिरे से सोचना होगा। अभी देश के सामने जो परिस्थितियां हैं, हमें उन परिस्थितियों में इस आपदा में बेहतरीन अवसर का अंदाजा मिला है, हमारे सामने बेहतरीन अवसर है। प्रधान मंत्री जी जो कहते हैं, गलत नहीं कहते, वह अवसर हमारे सामने है। उन संभावनाओं के कारण मैंने आप सबको इस बात के लिए कहा है।

महोदय, मैं अंत में vaccines को लेकर एक बात कहूंगा कि Edward Jenner ने जब चेचक का टीका बनाया था, तो कहते हैं कि सबसे पहले उसने अपने आपको लगाया था। जितने भी गाय चराने वाले लोग हैं, इनको चेचक नहीं होता है। चेचक से शरीर में फफोले पड़ जाते हैं, उसके liquid को लेकर अपने शरीर में inject किया और फिर बाद में चेचक का टीका लगाया, बाद में उसको उसका effect नहीं हुआ। मैं यह उदाहरण आपको इसलिए दे रहा हूं कि vaccine कोई राजनीति नहीं है, vaccines के साथ में हमने कोई व्यापार नहीं किया है। हमने परोपकार पहले किया और व्यापार के बारे में वे लोग सोचेंगे, जो इसको बना रहे हैं। हमें यह समझना पड़ेगा कि इस विषम परिस्थिति में देश के वैज्ञानिक, देश का नेतृत्व और देश एकजुटता के साथ खड़ा हुआ। उसके बाद domestic tourists ने जिस प्रकार भारतीय पर्यटन को संभालने का काम किया है, मैं आपके माध्यम से इस सदन में खड़ा होकर देश का धन्यवाद करना चाहता हूं, उन्हें सैल्यूट करना चाहता हूं। मैं उन तमाम stakeholders की कठिनाइयों को भी समझता हूं और मैडम वंदना चव्हाण ने जो कहा है और जो आपने समस्याएं बताई हैं, उन समस्याओं को लेकर अभी Statue of Unity पर जो लगातार तीन दिन की conference हुई है, मैं उससे बाकायदा visually जुड़ा रहा हूं। अगर आप उनसे पूछेंगे, तो मैं खुद उनके प्रतिनिधि को लेकर Aviation Minister से जाकर मिला था। इस बीच में जितनी भी बातें हमारे पास आईं - हमें पैसा वापस नहीं मिल रहा है - even जो हमारे tour and travellers हैं, उनसे भी मैंने यह बात कही है कि जैसे होटल के लोग एक प्लेटफॉर्म पर आए हैं, कृपया आप भी आइए। अगर आप मेरी जगह होंगे, तो मैं आप से भी पूछूंगा - आप कहेंगे कि साहब, tour and travellers को मदद करनी है। मेरे पास data नहीं है, मैं किसकी बातों पर विश्वास करूं? कल को मुझ पर ही आरोप लगेंगे कि आपने अपने चहेते को पैसा दे दिया। आप मुझे क्षमा कीजिए, कोई आंकड़ा नहीं है। जहां तक guides का सवाल है, तो पिछले 6 सालों से regional guides का विवाद चल रहा था। मैंने उसका समाधान किया है और उसके बाद में tourist facilitator course हमने शुरू किया, जिसमें साढ़े पांच हजार से ज्यादा लोग पंजीकृत हुए। उनमें से 2,800 लोगों ने exam दिया है, क्योंकि बीच में बच्चे आए नहीं थे। वह exam चार बार किश्तों में आगे बढ़ा है, जिसका रिज़ल्ट एक साथ आएगा। तो एक हफ्ते के भीतर हमारे पास लगभग 2,900 tourist facilitators होंगे। वे जहां-जहां के रहने वाले हैं, उनके पास वहां की तथ्यात्मक जानकारियां होंगी। अगर वे guide बनाना चाहते हैं, तो उनको एक UN की भाषा और हमारे किसी एक राज्य की भाषा का अध्ययन करना होगा। अगर वे उस राज्य में हैं और जानते हैं, तो वे UN की सिर्फ एक भाषा को सीखें, उसके बाद हम उनको guide की मान्यता देंगे क्योंकि अभी मैंने ASI के साथ में शुरू किया है। हमारे पास इस समय कुल 3,772 monuments registered हैं, लेकिन देश में वह संख्या तो 10 हजार से ऊपर है। हमने उसकी re-listing का काम किया है, कुछ राज्यों के monuments हैं। दक्षिण में इतने विशाल और भव्य मंदिर हैं, ईसा पूर्व के हैं, क्या उनको हमें नहीं बताना चाहिए? जब कोई पैदा नहीं हुआ था, तब हमारे पास कला और संस्कृति सब कुछ था। यही तो हमारी पूंजी है, इस पर हम गर्व नहीं करें! और जिन्होंने गर्व

नहीं किया, शायद वही संकट में हैं। मुझे लगता है कि इस पर गर्व करना होगा,क्योंकि पर्यटन सिर्फ मौज-मस्ती का काम नहीं है, ज्ञान के आदान-प्रदान का भी काम है। जो लोग आते हैं, हम इस पर भी विचार करते हैं, लेकिन मैं बदलाव को अस्वीकार नहीं करता। जो पश्चिम से लोग आते हैं, वे पूरी रात अपने ड्रम के साथ नाचना चाहते हैं, हम कहते हैं कि नागालैंड में भी यह कल्चर हो सकता है, नागालैंड के लोग तैयार होंगे, तो हम रास्ता निकाल सकते हैं। मैं किसी चीज़ से इन्कार नहीं कर रहा हूं, लेकिन मैं एक बात जरूर कहूंगा कि हम इन आंकड़ों के साथ न्याय नहीं कर पाएंगे। हम एक बेहतर स्थिति में हैं। देश के सामने जो देश की प्रतिष्ठा है, वह काफी ऊंचाइयों पर गई है और हमें इस सच को स्वीकार करना पड़ेगा कि यह देश के प्रधान मंत्री जी की दूरदर्शिता के कारण गई है।

उपसभापति महोदय, मैंने शुरू में कहा था, जब श्री कृष्ण का उदाहरण दिया गया था, तो सिर्फ यही कारण था - मैं ऐसी उपमाएं नहीं दे रहा हूं कि कोई भगवान हो जाएगा। नेतृत्व जब अपना काम करता है, तो उस नेतृत्व के साथ परिणाम भी निकलते हैं, हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा। इसलिए मैं इस विषम परिस्थिति में भी, जहां पर भीषण तरीके से आर्थिक नुकसान हुए हैं, मैं उन तमाम लोगों से भी कहूंगा कि कालीबंगा, राखीगढ़ी, धोलावीरा, ये दुनिया की हिस्ट्री बदलने वाले स्थान हैं। महोदय, लोग कहते थे कि पश्चिम में structure construction, वर्ष 55 से शुरू हुआ। धोलावीरा के उत्खनन ने यह साबित कर दिया है कि दुनिया की geology में, archaeology में धोलावीरा बहुत पुराना है। राखीगढ़ी का उत्खनन हुआ। अभी दुनिया में बहस चल रही है, लेकिन वह हड़प्पा से पहले की संस्कृति है। वह हरियाणा में है। कालीबंगा राजस्थान में है, कालडी तमिलनाडु में है, अरचलूर भी वहां है। मैं आखिर में यही कहूंगा कि यह ज्ञान की धरती है। हमारे पास वह सब कुछ है, जो दुनिया देखना चाहती है, लेकिन जब पर्यटक आएं, तो हम उनकी जरूरतों को पूरा कर पाएं। अगर वे बदले परिवेश में होमस्टे में रहना चाहते हैं, तो हमारे पास वह ताकत भी होनी चाहिए। अगर वह खेत के बने मकान में रहना चाहता है, तो वह होना चाहिए। आप आज पिछले चार महीने के आंकड़े उठाकर देखिए, तो हमारा कोई भी टाइगर प्रोजेक्ट, हमारा कोई भी रिज़र्व फॉरेस्ट, हमारा कोई भी छोटा destination, कुछ भी खाली नहीं मिलता है। यह सच है कि जो दूसरा पक्ष है, वह निश्चित रूप से चुनौती से भरा हुआ है और इन दोनों में तालमेल बैठाने की जरूरत है। इस बात को मैं स्वीकार करता हूं।

उपसभापति महोदय, बहुत सारी बातें हैं, जिनको मैं इस अवसर पर कह सकता हूं। मैं उन सफलताओं को गिनाने से संतुष्ट नहीं हो रहा हूं। मैं मानता हूं कि अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है, जिसके लिए सरकार सजग है। हमारा नेतृत्व, उनके हर भाषण में कहीं न कहीं टूरिज़्म का संकेत होता है, इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि जो वे कहते हैं, वह पॉलिसी है। हमने सारे राज्यों को और stakeholders को टूरिज़्म पॉलिसी पहुंचाई है, एक महीने के आस-पास हो गया है, यह हमारी कोशिश होगी। अभी लगातार जो-जो प्रश्न उठते हैं, वे उसी बात पर उठते हैं कि टूरिज़्म पॉलिसी बनेगी या नहीं बनेगी? मुझे ऐसा लगता है कि इस बदलाव के बाद जो पॉलिसी बनेगी, वह दुनिया में वही स्थान प्राप्त करने के लिए बनेगी, जो भारत का लक्ष्य है। हम पूरा विश्वास करते हैं कि 2014 में 65वें स्थान से पांच वर्षों में 34वें स्थान पर आए थे। हमारी यात्रा 34वें स्थान से एक नंबर पर जानी थी। एक वर्ष शून्य वर्ष हो गया, लेकिन देश की जनता पर, यहां की संस्कृति पर, यहां के मूल्यों पर मेरा भरोसा है - और हमारे देश के नेतृत्व पर कि मैं आंकड़ा

नहीं बदलूंगा, लेकिन हमने जो लक्ष्य तय किया है, 2024 में हम वह लक्ष्य प्राप्त करेंगे। महोदय, चुनौतियां हैं, कठिनाइयां हैं, हम उन कठिनाइयों को सुगमता से पार करेंगे, यही प्रार्थना करते हुए मैं अपनी बात को यहां पर समाप्त करूंगा। हम सब यही मानकर चलें कि हम सब साथ हैं। देश के लिए पर्यटन मंत्रालय कोई अलग से ऐसा मंत्रालय नहीं है, जिसकी जिम्मेदारी नैतिक रूप से या संवैधानिक रूप से ले सकूं- मैं नैतिक रूप से ले सकता हूं, लेकिन संवैधानिक रूप से नहीं ले सकता हूं। ऐसे अनेक काम हुए हैं, जिनको शायद मैं लम्बा कह सकता हूं, लेकिन समय की अपनी मर्यादा है, आपने मुझे पर्याप्त समय दिया है। मैं पहले सोचकर आया था कि बहुत कुछ कहूंगा, लेकिन मैं शेर को कहकर ही अपनी बात खत्म कर देता हूं। सामान्यतः मुझे शेर पढ़ना नहीं आता है, लेकिन हम जैसा सदन में पढ़ते हैं, सुनते रहते हैं कि बहुत सारे लोग हैं, जो शेर बोलते हैं। मैं, सच में, हृदय से धन्यवाद करता हूं कि किसी भी सदस्य ने कोई ऐसी आलोचना नहीं की, जो मन को दुख दे या कोई गलत दिशा में हो। आप सभी ने सही बात कही है। कुछ फर्क हो सकता है कि हमको लगता है कि क्या होगा और शायद कुछ कारणों से बातें स्वीकार नहीं कर पाते होंगे।

"कुछ तो मजबूरियां रही होंगी, यूं कोई बेवफा नहीं होता।
जी बहुत चाहता है सच बोलें, क्या करें हौसला नहीं होता।"

शायद आपने ही यह एक बार कहा था, वही मैंने लिखा हुआ है। मुझे लगता है कि मैं फिर से सदन के सभी सदस्यों का धन्यवाद करते हुए कहूंगा कि इस चर्चा में आपने भाग लिया और मैं मानता हूं कि पर्यटन आर्थिक दृष्टि से, रोज़गार की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जिसमें देश गति के साथ आगे बढ़ेगा। आप सभी का सहयोग ऐसे ही मिलेगा, इस आशा के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं और उपसभापति जी, आपका भी हृदय से धन्यवाद करता हूं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now, the Message from Lok Sabha.

MESSAGES FROM LOK SABHA - *Contd.*

The Mines and Minerals (Development and Regulation) Amendment Bill, 2021

SECRETARY-GENERAL: Sir, I have to report to the House the following message received from the Lok Sabha, signed by the Secretary-General of the Lok Sabha:

"In accordance with the provisions of rule 96 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in Lok Sabha, I am directed to enclose the Mines and Minerals (Development and Regulation) Amendment Bill, 2021, as passed by Lok Sabha at its sitting held on the 19th March, 2021."

Sir, I lay a copy of the Bill on the Table.